साप्ताहिक
शहर सत्ता
PRGI NO. CTHIN/25/A2378
सोमवार, 06 जुलाई से 12 जुलाई 2026
हम दिखाएंगे आईना...
वर्ष : 02 अंक : 18 पृष्ठ : 12 मूल्य : 5 रुपए
www.shaharsatta.com

पेज 05 में...
पानी बोला, विकास डोला अब खाओ हिचकोला...!

पेज 12 में...
नहीं रहीं पंडवानी की महानायिका

पेज 10 ओटीटी से हटाई गई दिलजीत की फिल्म 'सतलुज'

सत्ता का आत्ममंथन

चिंतन शिविर 3.0 : नीतियों को धार, सुशासन को रफ्तार

कमियों को स्वीकार कर, खूबियों को तराशने की कवायद

डिजिटल गवर्नेंस और पारदर्शी शासन की राह तलाशती सरकार

दो दिनों के लिए 'लर्निंग मोड' में आया पूरा मंत्रिमंडल

मुख्य संवाददाता/प्रदीप चंद्रवंशी
मोबाईल नंबर 7000681023

जब सरकार खुद अपनी नीतियों को कसौटी पर परखने के लिए 'लर्निंग मोड' में आ जाए, तो शासन अधिक संवेदनशील और जन-केंद्रित हो जाता है। छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में 4 और 5 जुलाई 2026 को आईआईएम नवा रायपुर में आयोजित दो दिवसीय 'चिंतन शिविर 3.0' इसी सोच का जीवंत उदाहरण है। 'विकसित छत्तीसगढ़' के रोडमैप को आकार देने के लिए आयोजित यह शिविर केवल फाइलों और आंकड़ों की समीक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि भविष्य की चुनौतियों से निपटने का एक गंभीर वैचारिक ब्लूप्रिंट था। सुशासन एवं अभिसरण विभाग के इस विशेष आयोजन में जब पूरा मंत्रिमंडल, देश के चुनिंदा नीति नियंता और शीर्ष प्रशासनिक अधिकारी एक छत के नीचे बैठे, तो मकसद साफ था—सत्ता के आत्ममंथन से सुशासन को रफ्तार देना।

यह लगातार तीसरा वर्ष है जब राज्य सरकार ने खुद का आत्म-मूल्यांकन करने और भविष्य की रणनीति बनाने के लिए इस तरह के अकादमिक और व्यावहारिक मंच का सहारा लिया है। '3.0' का सीधा अर्थ है कि सरकार अब केवल तात्कालिक समस्याओं के समाधान तक सीमित नहीं है, बल्कि वह नीतियों में निरंतरता और दीर्घकालिक सुधारों की ओर बढ़ रही है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने उद्घाटन सत्र में स्पष्ट किया कि पिछले दो चिंतन शिविरों से निकले विचार अब जमीन पर उतर चुके हैं। उदाहरण के लिए—मंत्रालय में ई-ऑफिस व्यवस्था, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 और 'सेवा सेतु पोर्टल' (जिसके माध्यम से 36 विभागों की 520 से अधिक सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हैं) पिछले शिविरों की ही देन हैं। अतः चिंतन शिविर 3.0 सुशासन के अगले चरण की रूपरेखा तय करने का एक जरिया है।

राजनीतिक एवं रणनीतिक मायने

एक विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखें तो चिंतन शिविर 3.0 के पीछे राजनीतिक और प्रशासनिक संतुलन साधने की भी एक सोची-समझी रणनीति दिखाई देती है।

मिशन 2028 की तैयारी: हालांकि सरकार विकास की बात कर रही है, लेकिन पर्दे के पीछे यह प्रशासनिक कसावट आगामी विधानसभा चुनावों के लिए जमीन मजबूत करने का प्रयास भी है। सुशासन को सीधे जनता की संतुष्टि से जोड़कर सरकार अपनी छवि को बेदाग रखना चाहती है।

सामूहिक नेतृत्व की भावना: आईआईएम जैसे संस्थान में दो दिनों तक मुख्यमंत्री और मंत्रियों का साथ रहकर 'लर्निंग मोड' में आना यह दिखाता है कि सरकार व्यक्तिगत केंद्रित होने के बजाय सामूहिक जवाबदेही और विशेषज्ञता-आधारित निर्णय लेने की संस्कृति को बढ़ावा दे रही है।

महामंथन के प्रमुख स्तंभ

सुशासन, एआई (AI) और डिजिटल तकनीक का एकीकरण

चिंतन शिविर 3.0 की सबसे बड़ी विशेषता प्रशासन में आधुनिक तकनीक, विशेषकर **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)** और डिजिटल गवर्नेंस के उपयोग पर गहरा विमर्श रहा। नीति आयोग के विशेषज्ञों और प्रोफेसर अभय करंदीकर जैसे विचारकों की उपस्थिति में इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे फाइलों की लेटलतीफी को खत्म कर सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे अंतिम व्यक्ति तक पारदर्शी तरीके से पहुँचाया जाए। नक्सलवाद के मोर्चे पर मिली तकनीकी सफलताओं का उदाहरण देते हुए यह रेखांकित किया गया कि डेटा-संचालित शासन (Data-driven governance) से आंतरिक सुरक्षा और नागरिक सेवाओं दोनों को सुदृढ़ किया जा सकता है।

कृषि, ग्रामीण विकास और सहकारिता

छत्तीसगढ़ की आत्मा इसके गांवों और खेतों में बसती है। कृषि नीति विशेषज्ञ डॉ. रमेश चंद के सत्रों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। मुख्यमंत्री साय ने स्पष्ट किया कि "सहकारिता से बढ़ेगी किसानों की आय और यही विकसित छत्तीसगढ़ की नींव होगी।" पारंपरिक खेती से हटकर हॉर्टिकल्चर (बागवानी), खाद्य प्रसंस्करण (Food Processing), और कृषि-तकनीक (Agri-tech) को बढ़ावा देने पर सहमति बनी ताकि किसानों को उनके उत्पाद का अधिकतम मूल्य मिल सके।

पर्यटन: सतत समृद्धि का नया इंजन

छत्तीसगढ़ अपनी प्राकृतिक सुंदरता, जलप्रपातों और समृद्ध जनजातीय संस्कृति के लिए जाना जाता है। वरिष्ठ आईएएस और पर्यटन विशेषज्ञ सुमन बिल्ला ने 'सतत समृद्धि के इंजन के रूप में पर्यटन' विषय पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। विशेष रूप से बस्तर क्षेत्र को, जो अब तेजी से शांति की ओर लौट रहा है, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करने के लिए एक व्यापक इंफ्रास्ट्रक्चर और निवेश मॉडल की आवश्यकता बताई गई। पर्यटन से स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करना प्राथमिकता सूची में शीर्ष पर है।

नेतृत्व विकास, खेल और युवा ऊर्जा

शिविर में ओलंपिक पदक विजेता गगन नारंग और डॉ. विनय सहस्रबुद्धे जैसे दिग्गजों ने भी अपने विचार साझा किए। खेल संस्कृति के विकास, युवाओं में नेतृत्व क्षमता की वृद्धि और प्रशासनिक तंत्र को अधिक परिणाम-आधारित (Result-oriented) बनाने के गुर मंत्रियों को सिखाए गए। इसके अलावा गौर गोपाल दास के प्रेरक व्याख्यान ने मंत्रियों और अधिकारियों को तनाव मुक्त रहकर जनसेवा करने की आध्यात्मिक व व्यावहारिक सीख दी।

चिंतन शिविर 3.0 से विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण को मिलेगी नई दिशा : मुख्यमंत्री

विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण की दीर्घकालिक रणनीति, सुशासन को और अधिक प्रभावी बनाने तथा भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप प्रशासनिक क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से सुशासन एवं अभिसरण विभाग तथा भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय 'चिंतन शिविर 3.0' का सफलतापूर्वक समापन हुआ। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, मंत्रिपरिषद के सदस्यों, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों तथा देश के प्रतिष्ठित नीति विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और विषय विशेषज्ञों ने शासन, विकास और जनसेवा के विभिन्न आयामों पर व्यापक विचार-विमर्श किया।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि चिंतन शिविर अब केवल विचारों के आदान-प्रदान का मंच नहीं रह गया है, बल्कि शासन व्यवस्था में ठोस सुधारों का प्रभावी माध्यम बन चुका है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार आधुनिक, पारदर्शी, तकनीक-संचालित और नागरिकों की आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील प्रशासन विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि चिंतन शिविर 3.0 से प्राप्त सुझाव विकसित छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा को नई दिशा देंगे तथा इन्हें शीघ्र ही नीतिगत एवं प्रशासनिक पहलों के रूप में लागू किया जाएगा। दूसरे दिन आयोजित 'सतत समृद्धि के इंजन के रूप में पर्यटन' विषयक सत्र में वरिष्ठ आईएएस अधिकारी एवं पर्यटन नीति विशेषज्ञ श्री सुमन बिल्ला ने कहा कि छत्तीसगढ़ प्राकृतिक, जनजातीय और सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र में देश का अग्रणी हाई-वैल्यू, लो-इम्पैक्ट पर्यटन गंतव्य बनने की अपार क्षमता रखता है। उन्होंने पर्यटन अवसंरचना, सामुदायिक भागीदारी, निवेश, उत्तरदायी पर्यटन और सुशासन आधारित पर्यटन मॉडल पर बल दिया। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि केंद्र और राज्य सरकार के बेहतर समन्वय से छत्तीसगढ़, विशेषकर बस्तर क्षेत्र, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर नई पहचान बना सकता है। राज्य की औद्योगिक नीति भी पर्यटन निवेश को नई गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

'सबका प्रयास के माध्यम से विकासपरक राजनीति' विषय पर लोकसभा सदस्य श्री शशांक मणि त्रिपाठी ने कहा कि जिला ही विकास का वास्तविक केंद्र होना चाहिए। उन्होंने प्रत्येक जिले के लिए विकासोन्मुख योजना, स्थानीय आर्थिक क्षमता के अनुरूप विकास रणनीति तथा जिला-स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद (District GDP) आधारित नियोजन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने 'अमृत प्रयास', 'बनयान रिवोल्यूशन' और सहभागी शासन की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिला-केंद्रित विकास मॉडल उद्यमिता, रोजगार, कृषि परिवर्तन, स्थानीय नवाचार और जन-क्षमता के विकास को नई गति देगा तथा विशेष रूप से टियर-2 और टियर-3 क्षेत्रों के लिए परिवर्तनकारी सिद्ध होगा।

पिछले दो चिंतन शिविरों में प्राप्त सुझावों का सफल क्रियान्वयन

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि पिछले दो चिंतन शिविरों में प्राप्त सुझावों को राज्य सरकार ने सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया है। मंत्रालय में ई-ऑफिस प्रणाली लागू होने से फाइलों के निपटारे की प्रक्रिया अधिक तेज, पारदर्शी और समयबद्ध हुई है। मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 के माध्यम से आम नागरिकों की शिकायतों के त्वरित समाधान की प्रभावी व्यवस्था स्थापित हुई है, वहीं सेवा सेतु के माध्यम से 36 विभागों की 520 से अधिक सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध कराकर नागरिक सेवाओं को सरल, सुगम और पारदर्शी बनाया गया है। उन्होंने कहा कि यही इस चिंतन प्रक्रिया की सबसे बड़ी सफलता है कि विचार अब धरातल पर परिणाम के रूप में दिखाई दे रहे हैं।

सरकार का चिंतन शिविर मनोरंजक नौटंकी : दीपक बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने सरकार के चिंतन शिविर को मनोरंजक नौटंकी बताया है उन्होंने कहा की ढाई साल तक सब गुड़ गोबर करने के बाद भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को चिंतन शिविर में सरकार चलाने के गुण सिखाये जा रहे है। अभी आपकी चलाचली का बेला है, फेयरवेल के टाइम सरकार चलाने का गुण सिखा रहे है। भारतीय जनता पार्टी ने पिछले ढाई सालों में प्रदेश की जनता को निराश किया है। कोई भी विकास कार्य चालू नहीं कर पाये, युवाओं को निराश किया है, एक भी शिक्षक की भर्ती नहीं कर पाई, युवाओं को रोजगार नहीं दिया, किसानों से धोखा किया और महिलाओं से धोखा किया। अब चिंतन शिविर में फिर से ठगने का एक नया गुण सिखने गये है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा की ढाई साल में सरकार नाम की संस्था तो कहीं दिखी नहीं कानून व्यवस्था की हालत यह हो गयी की आदमी जिन्दा जलाए जा रहे घर में घुस कर गोलियां मारी जा रही कलेक्टर एसपी कार्यालय जलाये जा रहे युवा रोजगार को तरस रहा किसान खाद को तरस रहा, महिलाये सुरक्षित नहीं भाजपा की सरकार कहीं दिखती ही नहीं और ज़ब सब कुछ बर्बाद कर दिया तो सरकार चलाने के लिए चिंतन कर रहे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा है कि ढाई साल के कुशासन में यह सरकार अलोकप्रिय हो चुकी है।

पहली तेज बारिश में डूबी राजधानी

कॉलोनी-घरों में घुसा पानी, सड़कें-अंडरब्रिज बनी नदी

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में मानसून की पहली तेज बारिश ने नगर निगम और रेलवे की तैयारियों की पोल खोल दी। कुछ ही देर की बारिश में रेलवे स्टेशन, अंडरब्रिज, सड़कें और कई कॉलोनियां जलमग्न हो गईं। शहर के निचले इलाकों के साथ-साथ पॉश कॉलोनियों में भी पानी घुसने से लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

ए-1 श्रेणी के रायपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-1 पर शनिवार शाम करीब 5 बजे बारिश के दौरान शेड से झरने की तरह पानी गिरने लगा। छत के नीचे खड़े यात्री भी भीग गए और सामान लेकर सुरक्षित जगह की तलाश में इधर-उधर भागते नजर आए। प्लेटफॉर्म पर पानी भरने से यात्रियों की आवाजाही भी प्रभावित हुई। स्टेशन पर मौजूद लोगों ने इस अव्यवस्था का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर साझा किया, जो तेजी से वायरल हो रहा है।

घरों में घुसा पानी, कई इलाके जलमग्न

डीडी नगर जोन-5 में कई घरों के भीतर घुटनों तक पानी भर गया। शंकर नगर और आसपास की कॉलोनियों में भी बारिश का पानी घरों में घुस गया। चौबे कॉलोनी में आसपास के पांच तालाबों का पानी रिहायशी इलाके में पहुंच गया, जिससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

महापौर के बंगले के बाहर भी जलभराव

बारिश का असर शहर के वीआईपी इलाकों में भी दिखाई दिया। महापौर मीनल चौबे के बंगले के बाहर भी नाली का पानी भर गया। शहर के अधिकांश वार्डों में जलभराव की स्थिति बनी रही और कई प्रमुख सड़कें पानी में डूब गईं।

अंडरब्रिज बने मुसीबत

बारिश के चलते गुढ़ियारी अंडरब्रिज में पानी भर गया, जिससे आवागमन बाधित हो गया। वहीं, फाफाडीह अंडरब्रिज में सुबह करीब 5 बजे से एक ट्रक पानी में फंसा रहा, जिसके कारण यातायात प्रभावित हुआ और लोगों को वैकल्पिक मार्गों का सहारा लेना पड़ा। नेता प्रतिपक्ष आकाश तिवारी ने शहर में हुए जलभराव को लेकर सरकार और नगर निगम पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि रायपुर के सभी 70 वार्डों में लोग परेशान हैं। उनका आरोप है कि सिर्फ एसी कमरों में बैठक करने से जिम्मेदारी पूरी नहीं होती। सरकार न गर्मी में लोगों को पर्याप्त पेयजल उपलब्ध करा पा रही है और न ही बारिश में जलभराव से राहत दिला पा रही है।

पिंक पेट्रोल यूनिट ने भटके हुए 02 वर्षीय बच्चे को परिजनों से मिलाया

रायपुर। रायपुर पुलिस कमिश्नरेट द्वारा महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा हेतु संचालित पिंक पेट्रोल यूनिट लगातार शहर में पेट्रोलिंग कर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में दिनांक 04.07.2026 को उत्तर जोन की पिंक पेट्रोल टीम द्वारा थाना गुढ़ियारी क्षेत्र अंतर्गत कर्मा चौक में पेट्रोलिंग की जा रही थी।

पेट्रोलिंग के दौरान टीम को कर्मा चौक के पास लगभग 02 वर्षीय बालक रोते हुए अकेला मिला। बालक कम उम्र का होने के कारण अपना नाम एवं माता-पिता की जानकारी नहीं बता पा रहा था। पिंक पेट्रोल टीम द्वारा संवेदनशीलता दिखाते हुए तत्काल बच्चे को सुरक्षित संरक्षण में लेकर आसपास के लोगों से पूछताछ कर परिजनों की तलाश प्रारंभ की गई। लगातार प्रयास के बाद बच्चे के चाचा रोहन ध्रुव की जानकारी प्राप्त हुई, जिन्हें मौके पर बुलाकर बच्चे की पहचान कराई गई। इसके पश्चात बच्चे के माता-पिता पूजा ध्रुव एवं हीराधार ध्रुव को सूचना देकर बुलाया गया तथा सत्यापन उपरांत बालक को सकुशल उनके सुपुर्द किया गया।

बच्चे को सुरक्षित वापस पाकर परिजनों द्वारा रायपुर पुलिस एवं पिंक पेट्रोल यूनिट का आभार व्यक्त किया गया। रायपुर पुलिस कमिश्नरेट की पिंक पेट्रोल यूनिट महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा तथा सहायता के लिए सदैव तत्पर है। किसी भी आपात स्थिति या सहायता हेतु पिंक पेट्रोल यूनिट से संपर्क करें।

308 विवेचकों को ई-साक्ष्य संकलन हेतु मोबाइल फोन वितरित

पुलिस कमिश्नर डॉ. संजीव शुक्ला द्वारा पुलिस कमिश्नर कार्यालय में किया गयावितरण

रायपुर। पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार कमिश्नरेट रायपुर में पदस्थ विवेचकों को विवेचना कार्य को तकनीकी रूप से और अधिक प्रभावी बनाने हेतु दिनांक 04.07.2026 को पुलिस कमिश्नर कार्यालय में मोबाइल फोन वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में पुलिस कमिश्नर, रायपुर डॉ. संजीव शुक्ला ने स्वयं मोबाइल वितरण कर कार्य की शुरुआत की। पुलिस मुख्यालय द्वारा नवीन कानूनों के बेहतर क्रियान्वयन हेतु प्रदत्त कुल 308 विवेचकों को दिए गए मोबाइल उपकरणों का प्राथमिक उद्देश्य ई-साक्ष्य (इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य) का त्वरित एवं सुरक्षित संकलन, उसके व्यवस्थित दस्तावेजीकरण और विभिन्न तकनीकी प्लेटफॉर्मों के साथ समन्वय सुनिश्चित करना है। इन मोबाइल्स के माध्यम से फ़ील्ड में साक्ष्य संग्रह, तस्वीरीकरण, ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग और डिजिटल-आधारित रिपोर्टिंग को मानकीकृत किया जाएगा।

पुलिस कमिश्नर डॉ. संजीव शुक्ला ने विवेचकों को निर्देश दिए कि वे नवीन तकनीक का बेहतर उपयोग करते हुए डिजिटल ऐप्स, ई-साक्ष्य संचालन प्रोटोकॉल और डेटा सुरक्षा के मानकों का पालन अनिवार्य रूप से करें। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक तरीके से संचालित विवेचना से न केवल मामले सुलझाने की गति बढ़ेगी बल्कि न्यायालय में प्रस्तुत साक्ष्यों की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी। यह पहल राज्य पुलिस मुख्यालय की व्यापक डिजिटल सुदृढ़ता नीति का हिस्सा है।

दुखी कर गया 'सुखी'

रायपुर प्रेस क्लब में वरिष्ठ पत्रकार सुखनंदन बंजारे को भावभीनी श्रद्धांजलि

रायपुर। रायपुर प्रेस क्लब में रविवार को वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रेस क्लब के पूर्व उपाध्यक्ष स्वर्गीय सुखनंदन बंजारे की स्मृति में श्रद्धांजलि एवं शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा में बड़ी संख्या में पत्रकारों, सामाजिक प्रतिनिधियों, जनप्रतिनिधियों तथा उनके शुभचिंतकों ने उपस्थित होकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा दो मिनट का मौन रखकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए रायपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष मोहन तिवारी ने कहा कि सुखनंदन बंजारे केवल पत्रकार साथी नहीं, बल्कि उनके अत्यंत करीबी मित्र थे। उन्होंने भावुक शब्दों में कहा कि पत्रकारिता जगत में दोनों की जोड़ी "जय-वीरू" के नाम से जानी जाती थी और उनका असमय निधन उनके लिए व्यक्तिगत तथा पूरे पत्रकारिता जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने बंजारे के मिलनसार, सहज, हंसमुख एवं जुझारू व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा पत्रकारिता को जनसरोकारों से जोड़कर निभाया। मोहन तिवारी ने कहा कि पत्रकार अक्सर अपनी व्यस्त दिनचर्या में स्वयं के स्वास्थ्य की उपेक्षा कर देते हैं, जिसके गंभीर परिणाम सामने आते हैं। उन्होंने सभी पत्रकारों से नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराने तथा स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने का आग्रह किया। साथ ही रायपुर प्रेस क्लब की ओर से स्वर्गीय सुखनंदन बंजारे के परिवार को हरसंभव सहयोग का भरोसा भी दिलाया। वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश शर्मा ने कहा कि सुखी का जाना दुखी कर गया... उन्होंने सुखनंदन बंजारे ने निष्पक्ष, जिम्मेदार और जनपक्षधर पत्रकारिता के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई। उनका सरल व्यवहार, सहयोगी स्वभाव और सकारात्मक सोच उन्हें सभी के बीच प्रिय बनाती थी।

वरिष्ठ पत्रकार राजेश जॉन पॉल ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सुखनंदन बंजारे पूरी निष्ठा, ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ पत्रकारिता के प्रति समर्पित रहे। उनका आत्मीय व्यवहार और साथियों के प्रति अपनापन उन्हें सबसे अलग पहचान दिलाता था। उनका असामयिक निधन पत्रकारिता जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं स्वर्गीय सुखनंदन बंजारे के शिक्षक प्रो. नृपेंद्र शर्मा ने उन्हें स्मरण करते हुए कहा कि छात्र जीवन से ही उनमें सीखने की ललक, समाचारों के प्रति गंभीर दृष्टि और समाज के प्रति गहरी संवेदनशीलता दिखाई देती थी। उन्होंने कहा कि सुखनंदन ने अपने पूरे पत्रकारिता जीवन में मूल्यों और नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी तथा अपने व्यवहार, कार्यशैली और जनपक्षधर सोच से एक जिम्मेदार पत्रकार की पहचान स्थापित की। उनका निधन उनके विद्यार्थियों, सहकर्मियों और पूरे पत्रकारिता जगत के लिए अत्यंत पीड़ादायक क्षति है। रायपुर प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर ने प्रेस क्लब में सुखनंदन बंजारे के साथ पदाधिकारी के रूप में बिताए समय को याद करते हुए कहा कि वे अपने कार्य के प्रति अत्यंत समर्पित और ऊर्जावान थे। उन्होंने भी पत्रकारों से अपने स्वास्थ्य के प्रति गंभीर रहने का आग्रह किया। पूर्व विधायक कुलदीप जुनेजा ने कहा कि नगर निगम की रिपोर्टिंग के दौरान उनका सुखनंदन बंजारे से प्रतिदिन संपर्क होता था। वे हमेशा आमजन की समस्याओं को गंभीरता से उठाते थे और जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से समाचारों के माध्यम से सामने लाते थे। उनका व्यवहार अत्यंत सरल, विनम्र और सकारात्मक था, जिसके कारण वे सभी वर्गों में सम्मानित थे।

सभा में वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप जैन, हितेश व्यास एवं शगुफ्ता शीरीन सहित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने स्वर्गीय सुखनंदन बंजारे को कर्मठ, सरल, सहयोगी और पत्रकारिता के प्रति पूर्णतः समर्पित व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि उनका निधन मीडिया जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित सभी पत्रकारों एवं गणमान्य नागरिकों ने स्वर्गीय सुखनंदन बंजारे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण करते हुए उनकी जनपक्षधर पत्रकारिता की विरासत को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। अंत में दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोकाकुल परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

साप्ताहिक शहर सत्ता

छत्तीसगढ़ के स्कूलों में बड़ा बदलाव!

‘No Bag Day’ लागू करने की मांग, अब किताबों से मिलेगी राहत

रायपुर। छत्तीसगढ़ के स्कूलों में विद्यार्थियों के बढ़ते शैक्षणिक दबाव को कम करने और उन्हें व्यवहारिक ज्ञान से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की मांग उठी है। छत्तीसगढ़ उर्दू अकादमी के अध्यक्ष इदरीस गांधी ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को पत्र लिखकर राज्य के सभी शासकीय एवं निजी विद्यालयों में सप्ताह में एक दिन ‘नो बैग डे’ लागू करने का अनुरोध किया है। उनका कहना है कि इस पहल से बच्चों का मानसिक तनाव कम होगा और उन्हें किताबों से इतर जीवनोपयोगी विषयों की जानकारी भी मिलेगी।

मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में इदरीस गांधी ने सुझाव दिया है कि सप्ताह में एक दिन विद्यार्थियों को बिना स्कूल बैग के विद्यालय बुलाया जाए। इस दिन पारंपरिक पढ़ाई के बजाय गतिविधि आधारित शिक्षण (Activity-Based Learning) को बढ़ावा दिया जाए, ताकि बच्चे नई चीजें सीखने के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व का भी विकास कर सकें। उनका मानना है कि शिक्षा केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन में काम आने वाले व्यावहारिक कौशल भी सिखाए जाने चाहिए।

इन विषयों का दिया जाए प्रशिक्षण

इदरीस गांधी ने सुझाव दिया कि ‘नो बैग डे’ के दौरान विद्यार्थियों को पारंपरिक पढ़ाई के बजाय जीवनोपयोगी और व्यवहारिक विषयों का प्रशिक्षण दिया जाए। इसमें प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड), साइबर सुरक्षा, सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियम, पर्यावरण संरक्षण, वित्तीय साक्षरता, योग-ध्यान, खेलकूद, स्थानीय कला एवं संस्कृति, व्यक्तित्व विकास तथा नेतृत्व क्षमता जैसे विषय शामिल हों। उनका कहना है कि ऐसी गतिविधियां बच्चों के आत्मविश्वास, रचनात्मकता और व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाएंगी तथा उन्हें भविष्य का जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने में मदद करेंगी।

अन्य राज्यों की पहल का दिया उदाहरण

पत्र में इदरीस गांधी ने कर्नाटक सहित देश के कुछ अन्य राज्यों का उदाहरण भी दिया है, जहां ‘नो बैग डे’ और गतिविधि आधारित शिक्षण की पहल सफल रही है। उन्होंने कहा कि इन राज्यों में इस व्यवस्था के सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुचि बढ़ी है, उनका मानसिक तनाव कम हुआ है और उनकी रचनात्मक क्षमता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

छत्तीसगढ़ में भी मिलेगा बड़ा लाभ

उन्होंने कहा कि यदि यह व्यवस्था छत्तीसगढ़ में लागू होती है, तो शिक्षा प्रणाली अधिक कौशल आधारित और अनुभवात्मक बनेगी। बच्चों को केवल परीक्षा केंद्रित शिक्षा नहीं मिलेगी, बल्कि वे जीवन की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार होंगे।

रायगढ़ में ट्रेलर ने बाइक सवारों को रौंदा, 2 की मौत

रायगढ़ रायगढ़ जिले में एक भीषण सड़क हादसे ने दो परिवारों की खुशियां छीन लीं। चक्रधर नगर थाना क्षेत्र के बंगुरसिया रोड पर तेज रफ्तार ट्रेलर ने बाइक सवार तीन युवकों को जोरदार टक्कर मार दी। इस दर्दनाक हादसे में दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल है, जिसका अस्पताल में इलाज जारी है। मिली जानकारी के अनुसार, तमनार थाना क्षेत्र के ग्राम महलोई निवासी ज्ञानचंद मिर्धा (21), प्रकाश राठिया (20) और बुटरु (21) रविवार सुबह किसी काम से रायगढ़ आए थे। काम निपटाने के बाद तीनों एक ही बाइक पर सवार होकर अपने गांव लौट रहे थे। दोपहर करीब 11 बजे जैसे ही वे बंगुरसिया रोड पर पहुंचे, तभी सामने से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाते हुए उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार तीनों युवक सड़क पर गिर पड़े। इस हादसे में प्रकाश राठिया की मौके पर ही ट्रेलर के पहिए के नीचे आने से दर्दनाक मौत हो गई, जबकि ज्ञानचंद मिर्धा और बुटरु गंभीर रूप से घायल हो गए।

अवैध खदान में चट्टान गिरने से 2 मजदूरों की दर्दनाक मौत

सूरजपुर। सूरजपुर जिले में रविवार को एक दर्दनाक हादसे ने दो परिवारों की खुशियां छीन लीं। कोतवाली थाना क्षेत्र के लांची गांव के पास संचालित एक कथित अवैध खदान में खुदाई के दौरान अचानक भारी चट्टान ढह गई। हादसे में मलबे के नीचे दबने से दो मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया और बड़ी संख्या में ग्रामीण घटनास्थल पर पहुंच गए। स्थानीय लोगों के अनुसार, खदान में मजदूर रोज की तरह खनन कार्य में जुटे हुए थे। इसी बीच अचानक खदान का एक हिस्सा भरभराकर ढह गया। किसी को संभलने का मौका नहीं मिला और वहां काम कर रहे दो मजदूर विशाल चट्टानों और मलबे के नीचे दब गए। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल राहत कार्य शुरू किया, लेकिन काफी मशक्कत के बाद जब दोनों को बाहर निकाला गया, तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। हादसे की जानकारी मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी तत्काल घटनास्थल पर पहुंचे। लोगों की मदद से राहत एवं बचाव अभियान चलाया गया।

एक्सपाइरी मिल्क पाउडर ने ली नवजात की जान? रायपुर में मौत के बाद मेडिकल स्टोर पर गंभीर आरोप

रायपुर। रायपुर में एक नवजात बच्ची की मौत के बाद गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। बच्ची के परिजनों ने शहर के एक मेडिकल स्टोर पर एक्सपायरी डेट का मिल्क पाउडर बेचने का आरोप लगाया है। घटना के बाद पुलिस और स्वास्थ्य विभाग हरकत में आ गए हैं और पूरे मामले की जांच शुरू कर दी गई है। फिलहाल अधिकारियों का कहना है कि जांच और पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चल सकेगा। जानकारी के मुताबिक, नवजात बच्ची की तबीयत अचानक खराब होने पर परिजन उसे इलाज के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे। जांच के दौरान डॉक्टरों ने बच्ची को पिलाए जा रहे मिल्क पाउडर के डिब्बे की जांच की। इसी दौरान कथित तौर पर उसकी एक्सपायरी डेट सामने आने के बाद परिजनों की चिंता बढ़ गई। इसके बाद उन्होंने संबंधित मेडिकल स्टोर से संपर्क कर इसकी शिकायत की। परिजनों का आरोप है कि मेडिकल स्टोर से खरीदा गया मिल्क पाउडर एक्सपायरी डेट का था। उनका कहना है कि बच्ची ने उसी मिल्क पाउडर का सेवन किया, जिसके बाद उसकी तबीयत लगातार बिगड़ती चली गई। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि शिकायत करने पर मेडिकल स्टोर संचालकों ने उनके पास मौजूद मिल्क पाउडर का डिब्बा अपने कब्जे में ले लिया और जांच के लिए दूसरा डिब्बा देने की बात कही। परिजनों का दावा है कि इसके बाद भी बच्ची की हालत में सुधार नहीं हुआ और इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घटना के बाद परिवार में शोक का माहौल है। मामले की सूचना मिलते ही पुलिस मेकाहारा अस्पताल पहुंची और प्रारंभिक जांच शुरू की। वहीं, मृत बच्ची के परिजनों ने मौदहापारा थाने में लिखित शिकायत भी दर्ज कराई है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामले की जांच शुरू कर दी है और सभी तथ्यों को खंगाला जा रहा है।

दुर्ग में लोन क्लोजर के नाम पर करोड़ों की ठगी एक साथ 267 महिलाओं को लगा बड़ा झटका

रायपुर। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में ग्रामीण महिलाओं को दिए जाने वाले ऋण से जुड़ा एक बड़ा वित्तीय घोटाला सामने आया है। धमधा थाना क्षेत्र में सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस बैंक और सेव फाइनेंशियल मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड से जुड़े इस मामले में 267 महिलाओं से वसूली गई ऋण किस्त और लोन क्लोजर की राशि में हेराफेरी कर 1 करोड़ 11 लाख 93 हजार 173 रुपये की धोखाधड़ी किए जाने का खुलासा हुआ है। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने शिकायत दर्ज होने के महज 24 घंटे के भीतर दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि अन्य संदिग्धों की तलाश जारी है।

पुलिस के अनुसार, सेव फाइनेंशियल मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड और सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के बीच हुए अनुबंध के तहत ग्रामीण महिलाओं को ऋण उपलब्ध कराया जाता था। ग्राहकों से हर महीने ऋण की किस्त और लोन क्लोजर की राशि वसूली जाती थी, जिसे बैंक या कंपनी के खाते में जमा किया जाना था। मामले का खुलासा तब हुआ जब कंपनी ने नियमित ऑडिट कराया। ऑडिट रिपोर्ट में पाया गया कि 267 ग्राहकों से वसूली गई करोड़ों रुपये की राशि कंपनी के रिकॉर्ड में जमा ही नहीं हुई। हिसाब-किताब में भारी गड़बड़ी मिलने के बाद जांच शुरू की गई।

प्रारंभिक जांच में पता चला कि धमधा शाखा में पदस्थ कुछ कर्मचारियों और शाखा प्रबंधक ने ग्राहकों से वसूली गई राशि बैंक या कंपनी में जमा करने के बजाय उसका गबन कर लिया। कंपनी ने संबंधित कर्मचारियों को नोटिस जारी कर राशि जमा करने और अपना पक्ष रखने का अवसर दिया, लेकिन न तो रकम लौटाई गई और न ही कोई संतोषजनक जवाब दिया गया। इसके बाद कंपनी ने धमधा थाना में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। तकनीकी साक्ष्यों, बैंक रिकॉर्ड और गवाहों के बयान के आधार पर दो संदिग्ध कर्मचारियों को हिरासत में लिया गया। पूछताछ के दौरान दोनों आरोपियों ने ग्राहकों से वसूली गई राशि का गबन करने और धोखाधड़ी करने की बात स्वीकार कर ली।

रविकांत सिंह राजपूत का 'समाचार 4 मीडिया 40 अंडर 40' अवार्ड के लिए हुआ चयन

रायपुर। हरिभूमि और आईएनएच के मनेंद्रगढ़ संवाददाता रविकांत सिंह राजपूत को 'समाचार 4 मीडिया' द्वारा देश के प्रतिष्ठित '40 अंडर 40' अवॉर्ड्स के चौथे संस्करण के लिए चयनित किया गया है। 28 जुलाई को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में भव्य समारोह के दौरान बड़ी मीडिया हस्तियों की मौजूदगी में उन्हें इस राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा जाएगा।

कड़े मानकों और दिग्गज जूरी ने किया चयन

'समाचार4 मीडिया 40 अंडर 40' मीडिया जगत का एक प्रतिष्ठित सम्मान है। इसके तहत प्रिंट, टेलीविजन और डिजिटल मीडिया से जुड़े देश भर के 40 वर्ष से कम आयु के उन प्रतिभाशाली युवा पत्रकारों को चुना जाता है, जिन्होंने अपने साहसिक कार्यों, बेजोड़ नेतृत्व क्षमता और पत्रकारिता के प्रति समर्पण के बल पर इंडस्ट्री में विशिष्ट पहचान बनाई है। इस वर्ष विजेताओं का चयन देश के शीर्ष संपादकों, मीडिया विशेषज्ञों और वरिष्ठ हस्तियों की एक उच्च स्तरीय जूरी द्वारा कड़े मानकों के आधार पर किया गया, जिसमें रविकांत ने बाजी मारी।

28 जुलाई को आयोजित है समारोह

रविकांत को यह सम्मान 28 जुलाई को शाम 5:00 बजे से इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के सेमिनार हॉल में आयोजित मुख्य समारोह के दौरान प्रदान किया जाएगा। इस भव्य अवॉर्ड नाइट से पहले सुबह 10:00 बजे से एक विशेष कॉन्फ्रेंस का भी आयोजन किया जा रहा है, जिसमें देश के जाने-माने और दिग्गज संपादक विभिन्न महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर अपने विचार साझा करेंगे।

पहले भी मिल चुका है यूनिसेफ का 'मीडिया 4 चिल्ड्रन अवॉर्ड’

गौरतलब है कि, इससे पूर्व रविकांत सिंह राजपूत को बच्चों के अधिकारों और उनके मुद्दों पर संवेदनशीलता के साथ उत्कृष्ट कार्य करने के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्था यूनिसेफ का प्रतिष्ठित 'मीडिया 4 चिल्ड्रन अवॉर्ड' भी मिल चुका है। चाहे ग्रामीण अंचलों में अंधविश्वास के कारण बंद पड़े स्कूलों का ताला खुलवाना हो (जैसे बसेलपुर शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला का मामला) या बच्चों की शिक्षा और भविष्य से जुड़ी खबरों को शासन-प्रशासन तक पहुंचाना हो, रविकांत ने हमेशा जमीनी हकीकत को पूरी मजबूती से उजागर किया है। यूनिसेफ के बाद अब '40 अंडर 40' की फिफ्टी में शामिल होना उनके पत्रकारिता करियर में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ता है।

संपादकीय

• सुकांत राजपूत

गंभीर मामलों में गिरफ्तारी पर मंत्री पद जाएगा

देश की राजनीति में जवाबदेही और पारदर्शिता लाने के मसले पर लंबे समय से बहस चलती रही है, लेकिन अब तक कोई ऐसा खाका सामने नहीं आ सका है, ताकि सिर्फ स्वच्छ छवि के लोगों को ही जनप्रतिनिधि बनने का अवसर मिले। आए दिन संसद और विधानसभाओं में आपराधिक पृष्ठभूमि से आने के बावजूद चुने गए जनप्रतिनिधियों की बढ़ती संख्या को लेकर चिंता तो जताई जाती है, मगर उसके हल को लेकर कोई ठोस पहल नहीं होती। संविधान के तहत केवल दोषी ठहराए गए जनप्रतिनिधियों को ही पद से हटाया जा सकता है और इस संबंध में संवैधानिक पद पर बैठे नेताओं को लेकर कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है।

इसी संदर्भ में केंद्र सरकार फिर से एक सौ तीसवें संविधान संशोधन विधेयक को संसद में पेश कर सकती है, जिसके तहत प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या अन्य मंत्रियों को पांच साल से ज्यादा सजा के प्रावधान वाले गंभीर अपराधों के लिए गिरफ्तार किए जाने और लगातार तीस दिनों तक हिरासत में रखे जाने पर पद से हटाने का प्रस्ताव है। अगर विधेयक की जांच के बाद संयुक्त संसदीय समिति इसे अपनी मंजूरी दे देती है, तो संसद के मानसून सत्र में इस पर बहस की संभावना है।

गौरतलब है कि पिछले वर्ष अगस्त में केंद्रीय गृहमंत्री ने संसद में यह विधेयक पेश किया था। हालांकि, विपक्षी दलों की ओर से उठाई गई कई आपत्तियों के बाद इसकी जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति का गठन किया गया था, लेकिन कांग्रेस सहित ज्यादातर विपक्षी दलों ने अपनी चिंताओं को नजरअंदाज किए जाने की आशंका के मद्देनजर समिति का बहिष्कार कर दिया था।

इसमें कोई दोराय नहीं कि भारतीय राजनीति में आपराधिक पृष्ठभूमि के लोगों का बढ़ता दखल आज एक गंभीर समस्या बन चुका है। मौजूदा कानूनी प्रावधानों के तहत तकनीकी जटिलताओं का लाभ उठाकर कई बार ऐसे लोग भी चुनकर संसद या विधानसभाओं में आ जाते हैं, जिन पर जघन्य अपराधों में शामिल होने का आरोप होता है। अक्सर सामने आने वाली रिपोर्ट में खासी संख्या में दागी जनप्रतिनिधियों के विधायिका में पहुंचने का ब्योरा होता है, जिस पर सभी दल चिंता जताते हैं, लेकिन ऐसे लोगों को टिकट न देने को लेकर किसी के भीतर कोई इच्छाशक्ति नहीं दिखती। दूसरी ओर, चुनाव आयोग भी इस मसले पर कोई स्पष्ट रुख अख्तियार नहीं करता है।

इस लिहाज से देखें, तो सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही बढ़ाने से लेकर लोकतंत्र में नैतिकता और शुचिता सुनिश्चित किए जाने के लिए एक सख्त नियमन वक्त की जरूरत है। मगर यह ध्यान रखने की जरूरत है कि नया कानून देश के लोकतांत्रिक ढांचे पर विपरीत प्रभाव डालने वाला न हो। दरअसल, विपक्षी दलों की ओर से प्रस्तावित कानून के प्रावधानों को अलोकतांत्रिक और संघीय ढांचे तथा प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ बताया जा रहा है, जिसमें किसी आरोप के बाद दोषसिद्धि के बजाय सिर्फ हिरासत के आधार पर दंडित किए जाने की व्यवस्था है।

आशंका यह जताई जा रही है कि सत्ताधारी दल की ओर से जांच एजेंसियों का बेजा इस्तेमाल करके राजनीतिक विरोधियों को गिरफ्तार कराया जा सकता है। ऐसे में चुनी हुई सरकारों के सामने भी अस्थिरता का संकट पैदा हो सकता है। जाहिर है, देश की राजनीति को आपराधिक छवि के लोगों से मुक्त करना जरूरी है, लेकिन इसके लिए जो कानून बने, उसमें अपराधों की प्रकृति स्पष्ट किए जाने से लेकर ऐसे सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जाने की जरूरत है, ताकि महज बदले या किसी सरकार को अस्थिर करने की मंशा से इसका दुरुपयोग न हो सके।

पानी बोला, विकास डोला अब खाओ हिचकोला...!

कॉलम - खुरचन
द्वारा- हरिदास

पहले लोग आकाश की ओर देखकर हाथ जोड़ रहे थे—"हे इंद्रदेव! पानी बरसा दो।" खेत सूख रहे थे, तालाब प्यासे थे। अखबारों में फ्रंट पेज की खबरें थीं तो टीवी चैनलों पर सूखे पर बहस चल रही थी। फिर इंद्रदेव ने पुकार सुनी ली और कहा—"लो भाई, जितना माँगा था उससे थोड़ा ब्याज सहित ले लो।" बस, उसके बाद शहर की सारी पोल पानी के साथ बहने लगी। सरकारी स्कूल हर साल की तरह इस साल भी लबालब हैं। जो स्कूल बच्चों को भविष्य की ओर ले जाने वाले थे, वे मछलियों के लिए भविष्य निर्माण केंद्र बन गए। बच्चे गणित नहीं, पानी की गहराई नापने लगे। कहीं एसा न हो कि स्कूलों को सर्कुलर जारी करना पड़े जिसमें लिखा होगा—"बच्चे कल से यूनिफॉर्म के साथ लाइफ जैकेट भी पहनकर आएँ। जिनके पास नाव हो, वे स्कूल की बस का इंतज़ार न करें।"

इस साल भी हमारी सड़कें बड़ी शर्मीली निकलीं। बारिश होते ही अपने गड्ढे पानी के नीचे छिपा लिए। वाहन चालक रोज़ लॉटरी खेलता है। पता नहीं अगला पहिया सड़क पर पड़ेगा या सीधे विकास की गहराई में उतर जाएगा। नगर निगम कहता है—"कहीं जलभराव नहीं है।" सही बात है। जल भराव नहीं, जल विस्तार है। हर साल बरसात में अपना शहर 'स्मार्ट सिटी' से आगे बढ़कर 'वॉटर सिटी' बन जाता है।

लगता है पानी बड़ा संस्कारी जीव है। वह पुराने रास्ते नहीं भूलता। जहाँ कभी तालाब था, वहीं लौटता है। जहाँ नाला था, वहीं बहना चाहता है। लेकिन वहाँ तो अब कॉलोनी है, मॉल है, बहुमंज़िला इमारत है। पानी बेचारा दरवाज़ा खटखटाता है। अंदर से जवाब आता है—"यहाँ प्लॉट बिक चुके हैं।" तब पानी कहता है—"ठीक है, मैं सड़क पर ही रह लेता हूँ।" शहर की सड़कें इतनी विनम्र हैं कि गड्ढों को कभी अकेला नहीं छोड़तीं। बारिश होते ही हर गड्ढे को निजी स्विमिंग पूल उपलब्ध करा देती हैं। पहले लोग पूछते थे, "घर किस रोड पर है?" अब पूछते हैं, "आपके घर तक पानी कमर तक आता है या सिर्फ घुटनों तक?" दरअसल हमने शहर में जल संरक्षण किया हुआ है। क्योंकि पानी कहीं बाहर जाने ही नहीं देते।

बारिश ने एक और रहस्य खोल दिया। शहर में सबसे तेज़ बहने वाली चीज़ पानी नहीं, जिम्मेदारी है। पानी एक विभाग से दूसरे विभाग में और जिम्मेदारी एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी में बहती रहती है। अंत में दोनों जनता के घर पहुँच जाते हैं। टीवी पर विशेषज्ञ बता रहे हैं कि यह 'अत्यधिक वर्षा' है। मानो शहर की तैयारी 'अत्यधिक ईमानदार' थी। हर साल यही अत्यधिक बारिश आती है, हर साल यही अत्यधिक जलभराव होता है, हर साल यही अत्यधिक आश्वासन मिलते हैं और अगले साल फिर अत्यधिक भूलने की बीमारी हो जाती है।

शहर में इतना पानी भर जाता है कि मछलियाँ भी पूछती हैं कि—"भाई, यह तालाब है या स्मार्ट सिटी?" जाहिर है कि जहाँ सड़क दिखे, समझिए अभी बारिश कम हुई है। जब बारिश लगातार हो तो लोग फिर आकाश की ओर देखकर कहते हैं—"हे भगवान! बारिश रोक दो।" भगवान भी शायद मुस्कुराते होंगे। वे सोचते हैं—"मैं तो सिर्फ पानी भेजता हूँ। शहर को तालाब बनाने का ठेका तो इन्सानों का खुद का लिया हुआ है।" सबसे दिलचस्प बात यह है कि बारिश का दोष भी बारिश पर ही मढ़ दिया जाता है। जैसे गर्मी का दोष सूरज का और ठंड का दोष सर्दी का।

किसी ने यह नहीं पूछा कि हर साल वही सड़क क्यों डूबती है, वही स्कूल क्यों तालाब बन जाता है और वही मोहल्ला नाव चलाने लायक क्यों हो जाता है। शायद इसलिए कि पानी हर साल आता है, लेकिन याददाश्त चुनावी वादों की तरह हर साल बह जाती है। सच तो यह है कि पानी जब बोलता है, तो विकास डोलने लगता है; और जब विकास डोलता है, तो हिचकोले हमेशा जनता ही खाती है।

याद रखें कि बारिश कभी आपदा नहीं होती। आपदा तो वह विकास होता है जो पहली ही बरसात में पानी से माफ़ी माँगने लगता है। बरसात हर साल आती है, लेकिन उससे पहले अगर थोड़ी-सी ईमानदारी भी आ जाए, तो शायद स्कूल तो स्कूल ही रहेंगे, तालाब नहीं बनेंगे; सड़कें भी सड़क ही रहेंगी, नदी नहीं बनेंगी; और जनता को यह तय नहीं करना पड़ेगा कि बच्चों के लिए छाता खरीदे या नाव।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी: राष्ट्र प्रथम का अमर संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

आज, 6 जुलाई का दिन राष्ट्रवाद और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में विश्वास रखने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत ही विशेष है। आज हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जन्म-जयंती मना रहे हैं। उनका जीवन साहस और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व में विद्वता, जनसेवा और उच्च नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम था। आधुनिक भारत के कुछ ही नेताओं में इतने सारे गुण एक साथ देखने को मिलते हैं।

श्यामा प्रसाद जी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जहां उन्हें सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन आसानी से मिल सकता था। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी की गिनती अपने समय के महान शिक्षाविदों में होती थी। लेकिन तमाम सुविधाओं के बावजूद श्यामा प्रसाद जी ने त्याग और राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना। उनका दृढ़ विश्वास था कि चाहे अंग्रेजी शासन का विरोध हो, सांप्रदायिकता से लड़ाई हो या मानवीय संकटों का सामना, वे अपने समय की इन चुनौतियों के सामने मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते। इस सफर में उन्हें कई गहरे व्यक्तिगत दुख भी झेलने पड़े। पहले उन्होंने अपने छोटे बच्चे को खोया और बाद में पत्नी का भी निधन हो गया। लेकिन इन दुखद परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने हौसले को कमजोर नहीं पड़ने दिया। उनका संकल्प और सशक्त हुआ, राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण और गहरा होता गया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना था। देश के विभाजन के समय उन्होंने पश्चिम बंगाल को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ वर्षों बाद इसी उद्देश्य से उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर भी संघर्ष किया। जेल और नजरबंदी भी उन्हें रास्ते से डिगा नहीं सकी। जब नजरबंदी के दौरान उनका निधन हुआ, तब वे उन अनगिनत लोगों से बहुत दूर थे, जिनके लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे। इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी व्यक्ति का सर्वोच्च बलिदान राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्मृति का हिस्सा बन जाता है। डॉ. मुखर्जी का बलिदान भी ऐसा ही था। आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि डॉ. मुखर्जी ने उस उद्देश्य के लिए अपना बलिदान दिया, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था। दशकों बाद, साल 2019 में आर्टिकल 370 और 35(A) को हटाया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि थी।

डॉ. मुखर्जी ने हमेशा राष्ट्रहित और भारतीय मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसके लिए उन्होंने मजबूत संस्थानों का निर्माण किया और ऐसी व्यवस्थाएं बनाईं, जो उस समय की सोच से काफी आगे थीं। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में ऐसे बदलाव किए, जो राष्ट्रहित और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप थे। शिक्षाविदों के एक सम्मेलन में डॉ. मुखर्जी ने कहा था, "शिक्षण संस्थानों को केवल बाबू या कम वेतन वाले कर्मचारी तैयार करने की फैक्ट्री समझना गलत है। हमें विद्यार्थियों को ऐसे तैयार करना होगा ताकि वे नेतृत्व की भूमिका निभा सकें। हमारी स्वशासी संस्थाओं जैसे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन्स, प्रांतीय और केंद्रीय विधायिकाओं में बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार हो सकें। इसके साथ ही वे वित्त, व्यापार और उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा दिखा सकें।"

कलकत्ता विश्वविद्यालय में अपने नेतृत्व में उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। इनमें लाइब्रेरी की सुविधाओं में सुधार, विज्ञान में रिसर्च को बढ़ावा देना, ऐतिहासिक वस्तुओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और कृषि से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू करना शामिल था। उन्होंने खेलकूद, टीचर्स ट्रेनिंग और स्टूडेंट वेलफेयर जैसे क्षेत्रों पर भी विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियों में अपनी यूनिवर्सिटी के प्रति गर्व की भावना विकसित हो, इसके लिए उन्होंने 24 जनवरी को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाने की परंपरा शुरू की। उन्होंने गुरुदेव टैगोर से विश्वविद्यालय के लिए एक गीत लिखने का अनुरोध भी किया था।

उनके जीवन के बाद के वर्षों में इस भावना का एक और उदाहरण तब देखने को मिला, जब उन्होंने भारतीय जनसंघ बनाने का निर्णय लिया। उस समय देश में हर तरफ कांग्रेस पार्टी का ही बोलबाला था। ऐसे में उन्होंने महसूस किया कि देश को एक ऐसे नए विकल्प की बहुत जरूरत है, जो भारत की प्रगति की बात भी करे और हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा रहे। शायद इसी को ध्यान में रखते हुए पार्टी का चुनाव चिह्न 'दीपक' यानि मिट्टी का दीया रखा गया। एक अकेला दीया देखने में भले ही छोटा लगे, लेकिन उसमें अपने आस-पास के गहरे से गहरे अंधकार को मिटाने की अद्भुत शक्ति होती है। जनसंघ ने अपने सक्रिय काल में और उसके बाद भी बिल्कुल यही किया।

ग्लोबल पासपोर्ट इंडेक्स 2026: भारत पिछड़ा, 100 देशों की लिस्ट से बाहर

नई दिल्ली। ग्लोबल पासपोर्ट इंडेक्स 2026 में भारत 125वें स्थान पर आ गया है. हालांकि पिछले साल से थोड़ा बेहतर होने के बावजूद भारत टॉप 100 देशों की सूची में जगह नहीं बना पाया. 2021 से 2023 के बीच 127वें स्थान पर रहने के बाद 2025 में भारत 124वें स्थान पर पहुंचा था, लेकिन अब यह फिर से पिछड़ गया है. इस तरह भारत के पासपोर्ट से सिर्फ 26 देशों में बिना वीजा के जाने की सुविधा मिलती है.

रैंकिंग की बात करें तो भारतीय पासपोर्ट नामीबिया से नीचे और फिलीपींस, मोरक्को और उज़्बेकिस्तान जैसे देशों के पीछे है, जबकि यह अजरबैजान और किर्गिस्तान जैसे देशों से रैंकिंग में आगे है. भारतीय पासपोर्ट धारक बिना वीजा के या 'वीजा ऑन अराइवल' सुविधा के साथ भूटान, नेपाल, जमैका, मकाऊ, फिलिस्तीन, ट्यूनीशिया, अंगोला और बारबाडोस जैसी जगहों की यात्रा कर सकते हैं. भारतीय पासपोर्ट होल्डर को अभी भी अमेरिका, यूके, जर्मनी, फ्रांस, चीन और संयुक्त अरब अमीरात समेत लगभग 88 देशों में जाने के लिए वीजा की जरूरत पड़ेगी. भारत के पड़ोसी देशों में चीन 104वें स्थान पर है, जो भारत (125वें स्थान) से काफी आगे है. हालांकि भारत कई दूसरे दक्षिण एशियाई देशों के मुकाबले काफी बेहतर स्थिति में है. बता दें कि ग्लोबल पासपोर्ट इंडेक्स 2026 में बांग्लादेश 166वें, नेपाल 164वें और पाकिस्तान 188वें स्थान पर है, जो इस इंडेक्स में सबसे नीचे के देशों में से एक है.

अमेरिका और फ्रांस का सेम नंबर

दरअसल ग्लोबल पासपोर्ट इंडेक्स 2026 की टॉप 10 लिस्ट में ज़्यादातर यूरोपीय देश शामिल हैं, जो ग्लोबल ट्रैवल मोबिलिटी में इस महाद्वीप की लगातार मजबूती को बनाए हुए हैं. खास बात यह है कि अमेरिका और फ्रांस दोनों ही इस लिस्ट में 11वें स्थान पर हैं और टॉप 10 में जगह बनाने से बस थोड़ा ही चूक गए, जबकि कनाडा 13वें स्थान पर है. इस तरह दुनिया के सबसे ताकतवर पासपोर्ट के मामले में यूरोप साफ तौर पर सबसे आगे निकल गया है.

टॉप 10 लिस्ट

बता दें कि इस लिस्ट में पहले नंबर पर स्वीडन दूसरे पर स्विट्जरलैंड और तीसरे नंबर पर फिनलैंड है जबकि जर्मनी को चौथा स्थान मिला है. उसके बाद क्रमश डेनमार्क, नीदरलैंड्स आयरलैंड, यूनाइटेड किंगडम, नॉर्वे और 10वें नंबर पर सिंगापुर है.

भारत और जापान की करीबी से चीन को लगी मिर्ची!

नई दिल्ली। जापान की प्रधानमंत्री सनाए तकाइची के भारत दौरे को लेकर चीन की रिएक्शन चर्चा का विषय बना हुआ है. चीन के सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स ने इस दौरे और भारत-जापान संबंधों पर कई आर्टिकल पब्लिश किए हैं. इन आर्टिकल में भारत और जापान के रिलेशन पर सवाल उठाने की कोशिश की गई है. खास तौर पर जापानी प्रतिनिधिमंडल की तरफ से स्थानीय नल के पानी का इस्तेमाल नहीं करने के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया गया है.ग्लोबल टाइम्स ने अपने एक आर्टिकल में लिखा कि प्रधानमंत्री सनाए तकाइची ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें बड़े भाई जैसा बताया. वहीं दूसरी ओर, जापानी प्रतिनिधिमंडल ने भारत में नल का पानी इस्तेमाल नहीं किया और केवल बोतलबंद पानी का इस्तेमाल किया. अखबार ने इसे भारत के प्रति जापान के दोहरे व्यवहार का उदाहरण बताया.

चीनी अखबार के अनुसार, जापानी प्रतिनिधिमंडल ने भारत दौरे के दौरान पीने के लिए सिर्फ बोतल बंद मिनरल वॉटर का इस्तेमाल किया. इतना ही नहीं, कुल्ला करने और मुंह साफ करने के लिए भी नल के पानी का इस्तेमाल नहीं किया गया. रिपोर्ट में दावा किया गया कि सरकारी विमान से बड़ी मात्रा में बोतल बंद पानी पहले ही भारत भेज दिया गया था, ताकि पूरे दौरे के दौरान उसी का इस्तेमाल किया जा सके।

अमेरिका एक एकमात्र दोस्त बताने पर नेतन्याहू ने दिया वेंस को जवाब

नई दिल्ली। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस को जवाब दिया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि तेल अबीब का यूएस के अलावा कोई और ताकतवर सहयोगी नहीं है. नेतन्याहू ने कहा कि इजरायल को भारत से जबरदस्त समर्थन मिला है. फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में नेतन्याहू ने कहा, 'हमारे कुछ अन्य मित्र भी हैं, जैसे भारत नाम का एक छोटा सा देश. इसकी आबादी 140 करोड़ है और वहां हमें जबरदस्त समर्थन प्राप्त है.' इजरायली नेता को गाजा, ईरान और लेबनान के साथ युद्ध की वजह से दुनियाभर में आलोचना का सामना करना पड़ा है. नेतन्याहू ने आगे कहा कि वह अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस का सम्मान करते हैं और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को व्हाइट हाउस में इजरायल का अब तक का सबसे बड़ा मित्र बताया।

होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों से टोल वसूलेगा ईरान

नई दिल्ली। ईरान ने दुनिया के सबसे अहम समुद्री व्यापार मार्गों में शामिल होर्मुज स्टेट से गुजरने वाले जहाजों पर सर्विस फीस लगाने की तैयारी शुरू कर दी है. चीन में ईरान के राजदूत अब्दोलरेजा रहमानी फजली ने कहा कि तेहरान जल्द ही नई व्यवस्था लागू करेगा. साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हालिया संघर्ष के दौरान ईरान का साथ देने वाले देशों को इस नई व्यवस्था में विशेष रियायत दी जाएगी.

चीन में विश्व शांति मंच पर किया ऐलान

बीजिंग में आयोजित वर्ल्ड पीस फोरम में बोलते हुए ईरानी राजदूत ने कहा कि होर्मुज स्टेट से जहाजों की आवाजाही के लिए नई व्यवस्था तैयार की जा रही है. इसके लिए ईरान, ओमान के साथ मिलकर काम कर रहा है. यह बयान ऐसे समय आया है, जब अमेरिका पहले ही साफ कर चुका है कि वह ईरान द्वारा जहाजों से शुल्क वसूलने के विचार का समर्थन नहीं करता.

60 दिनों तक बिना शुल्क गुजरने की मिली थी छूट

हालिया ईरान-अमेरिका संघर्ष खत्म होने के बाद दोनों देशों के बीच हुए शुरुआती समझौते के तहत व्यावसायिक जहाजों को 60 दिनों तक होर्मुज स्टेट से बिना किसी शुल्क के गुजरने की अनुमति दी गई थी. हालांकि, यह 60 दिन की व्यवस्था खत्म होने के बाद क्या नया नियम लागू होगा, इसे लेकर अभी तक कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है.

ईरानी राजदूत अब्दोलरेजा रहमानी फजली ने कहा कि होर्मुज स्टेट का एक हिस्सा ईरान के क्षेत्रीय जल में आता है. ऐसे में जहाजों से सर्विस फीस लेना पूरी तरह जायज है. उन्होंने कहा, 'हम निश्चित रूप से सर्विस फीस लेंगे, लेकिन इसे टोल टैक्स के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए.' सुरक्षित रास्ता उपलब्ध कराने, उनकी आवाजाही पर नजर रखने और भारी समुद्री यातायात से होने वाले पर्यावरणीय प्रभावों से निपटने जैसी सेवाओं के लिए लिया जाएगा.

आंध्र प्रदेश के 7 मछुआरे समुद्र में लापता

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम तट के पास बंगाल की खाड़ी में एक मछली पकड़ने वाली नाव के खराब होने के बाद उस पर सवार 7 मछुआरे लापता हो गए हैं. मछुआरों की तलाश के लिए भारतीय तटरक्षक बल (कोस्ट गार्ड), भारतीय नौसेना, मरीन पुलिस और राज्य प्रशासन की ओर से बड़े स्तर पर सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है.जानकारी के मुताबिक, सभी मछुआरे 1 जुलाई को विशाखापत्तनम फिशिंग हार्बर से समुद्र में मछली पकड़ने के लिए निकले थे. उन्हें 4 जुलाई तक वापस लौटना था. ईस्ट कोस्ट मैकेनाइज्ड फिशिंग बोट ओनर्स एसोसिएशन के अनुसार, समुद्र में नाव में तकनीकी खराबी आने के बाद उससे संपर्क टूट गया.लापता मछुआरों की पहचान अप्पालराजू, बंदिय्या, गरगय्या, सीतुडु, चिन्ना अम्मोरु, कारी चिन्ना और चिन्नय्या के रूप में हुई है. इनमें से छह मछुआरे विजयनगरम जिले के भोगापुरम के मुक्कम गांव के रहने वाले हैं, जबकि एक मछुआरा विशाखापत्तनम जिले के भीमुनीपट्टनम (भीमिली) का निवासी है।

राम मंदिर चंदा चोरी मामला

चंपत राय के इस्तीफे पर होगा फैसला

नई दिल्ली। राम मंदिर में दान राशि के गबन मामले के बीच श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की सोमवार को अहम बैठक होने जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में महासचिव चंपत राय और ट्रस्टी अनिल मिश्रा के इस्तीफों पर फैसला हो सकता है। साथ ही मामले की जांच और SIT जांच से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा होने की संभावना है। सूत्रों के अनुसार, बैठक में चंपत राय और डॉ. अनिल मिश्रा को अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाएगा। इसके बाद ट्रस्ट के सदस्य दोनों के इस्तीफे पर अंतिम फैसला करेंगे। चढ़ावे की गणना और मंदिर प्रबंधन की जिम्मेदारी दोनों के पास होने की वजह से चोरी का मामला सामने आने के बाद से ही वे सवालों के घेरे में हैं।

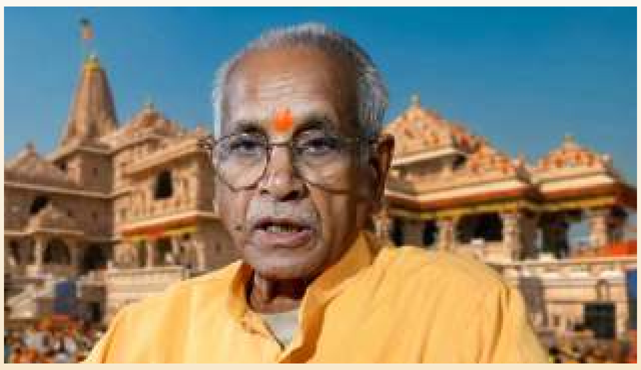

SIT की शुरुआती रिपोर्ट पर भी होगी चर्चा

बैठक में केवल इस्तीफों पर ही नहीं, बल्कि चढ़ावा चोरी मामले की जांच कर रही एसआईटी की शुरुआती रिपोर्ट पर भी चर्चा होगी। इसके अलावा दान पात्रों से मिलने वाली राशि की गिनती की व्यवस्था, मंदिर प्रबंधन से जुड़े प्रस्ताव और वित्त वर्ष 2025-26 के ऑडिट पर भी विचार किया जाएगा।चढ़ावा चोरी का मामला 6 जून को सामने आया था। इसके बाद ट्रस्ट की मांग पर 13 जून को एसआईटी का गठन किया गया। 25 जून को एफआईआर दर्ज होने के बाद अब तक 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

संत समाज ने चंपत राय का किया समर्थन

बैठक से एक दिन पहले रविवार को राम कचहरी में संत समाज ने ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय के समर्थन में अपनी बात रखी। संतों का कहना है कि SIT की जांच पूरी होने से पहले किसी को दोषी ठहराना सही नहीं है। महंत शशिकांत दास ने कहा कि दोषी कोई भी हो, उसे किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाना चाहिए, लेकिन जांच पूरी होने से पहले किसी को अपराधी घोषित करना गलत है। उन्होंने कहा कि पूरे मामले में केवल चंपत राय को निशाना बनाया जा रहा है, जबकि जांच अभी जारी है। संत सीताराम दास ने कहा कि यदि किसी के पास सबूत हैं तो उन्हें SIT को दें। मीडिया और सोशल मीडिया के जरिए किसी की छवि खराब करना उचित नहीं है।

बारिश और कड़ी सुरक्षा के बीच अमरनाथ यात्रा का पांचवां जत्था रवाना

श्रीनगर। मौसम का मिजाज तल्ख है और आसमान से पानी बरस रहा है, लेकिन बाबा बर्फानी के भक्तों की आस्था के आगे कुदरत की ये चुनौतियां भी बौनी साबित हो रही हैं। जम्मू-कश्मीर में लगातार हो रही बारिश और कड़े सुरक्षा इंतजामों के बीच आज सुबह श्री अमरनाथ यात्रा के लिए तीर्थयात्रियों का पांचवां जत्था जम्मू के भगवती नगर आधार शिविर से श्रीनगर के लिए रवाना हो गया। 'बम-बम भोले' और 'हर-हर महादेव' के गगनभेदी जयकारों के बीच श्रद्धालुओं का जोश देखने लायक था। जम्मू से रवाना होने पर एक भक्त ने कहा कि मैं प्रार्थना करता हूं कि भगवान की कृपा से ये व्यवस्थाएं बिना रुके चलती रहें। मैं प्रशासन से अनुरोध करूंगा कि भगवान की कृपा से ऐसी व्यवस्थाएं हमेशा बनी रहें, बहुत बड़ा बदलाव आया है।

ब्राजील के वर्ल्ड कप से बाहर होते ही नेमार ने लिया संन्यास

ब्राजील के स्टार खिलाड़ी नेमार ने इंटरनेशनल फुटबॉल से संन्यास का ऐलान करके सभी को चौंका दिया. उन्होंने ये फैसला ब्राजील के फीफा विश्व कप 2026 से बाहर होते ही लिया. आज राउंड ऑफ 16 के मुकाबले में नॉर्वे ने ब्राजील को 2-1 से हराकर उनका सफर खत्म किया. उन्होंने अपने करियर की शुरुआत मेटलाइफ स्टेडियम (न्यू जर्सी) में खेलकर की थी, उन्होंने अपने आखिरी अंतर्राष्ट्रीय मैच भी इसी ग्राउंड पर खेला. उन्होंने संन्यास की घोषणा करते हुए कहा कि वह अब थक चुके हैं.

नेमार ने 2010 में सीनियर टीम के लिए डेब्यू किया था और उन्होंने चार विश्व कप टूर्नामेंट में हिस्सा लिया. नेमार ने दो ओलंपिक टूर्नामेंट में भी हिस्सा लिया. 2012 में वह रजत पदक और 2016 में ब्राजील को स्वर्ण पदक दिला चुके हैं. हालांकि, मौजूदा वर्ल्ड कप में वह दो मुकाबलों में नजर आए और दोनों में वह शुरुआती इलेवन का हिस्सा नहीं थे.

हार के बाद फूट-फूट कर रोने लगे

जैसे ही फाइनल सीटी बजी और ब्राजील वर्ल्ड कप से बाहर हुई, वैसे ही इस दिग्गज की आंखों में आंसू आ गए. वह अपने पर काबू नहीं कर पाए और फूट-फूट कर रोने लगे. यू अपने दिग्गज के रोनों की तस्वीरों ने फैंस का दिल तोड़ दिया. ब्राजील के कई टीममेट्स ने नेमार को समझाने की कोशिश की, लेकिन बार्सिलोना के पूर्व खिलाड़ी टूट चुके थे.

ऑस्ट्रेलिया ने 7वीं बार जीता टी20 वर्ल्ड कप का खिताब

ऑस्ट्रेलिया ने लंदन के ऐतिहासिक लॉर्ड्स मैदान पर खेले गए फाइनल में इंग्लैंड को 7 विकेट से हराकर 2026 टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीत लिया. यह ऑस्ट्रेलिया महिला टीम के लिए टी20 विश्व कप का 7वां खिताब रहा. वहीं इंग्लैंड का एक बार फिर दूसरा खिताब जीतने का सपना टूट गया. मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया. पहले बैटिंग के लिए उतरी इंग्लैंड ने 20 ओवर में 4 विकेट पर 150 रन बोर्ड पर लगाए. ऑस्ट्रेलिया ने 17.1 ओवर में 3 विकेट गंवाकर जीत हासिल कर ली. यह महिला टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल का सबसे बड़ा सफल चेज रहा. टीम के लिए बेथ मूनी ने सबसे बड़ी पारी खेलते हुए 49 गेंदों में 10 चौके लगाकर 64 रन बनाए. इंग्लैंड के लिए कप्तान नैट साइवर-ब्रंट ने सबसे बड़ी पारी खेलते हुए 53 गेंदों में 5 चौकों की मदद से 58 रन स्कोर किए. इसके अलावा फ्रेया केम्प ने 44* रन बनाए. बाकी बल्लेबाज कोई बड़ा योगदान नहीं दे सकी, जिससे करीब 170 तक जाने वाला टोटल 150 पर ही रुक गया. इस दौरान ऑस्ट्रेलिया के लिए किम गर्थ, लूसी हैमिल्टन, एनाबेल सदरलैंड और कप्तान सोफी मोलिनक्स ने 1-1 विकेट अपने नाम किया. चेज के लिए मैदान पर उतरी ऑस्ट्रेलिया की शुरुआत खराब रही. टीम ने दूसरे ओवर में सिर्फ 17 रन के स्कोर पर पहला विकेट गंवा दिया था. जॉर्जिया वोल सिर्फ 09 रन बनाकर पवेलियन लौट गईं. इसके बाद बेथ मूनी और फीबी लिचफील्ड ने मिलकर दूसरे विकेट के लिए 67 गेंदों में 100 रनों की साझेदारी. इस साझेदारी ने जीत काफी हद तक ऑस्ट्रेलिया के खाते में डाल दी थी. 117 रन पर टीम का दूसरा विकेट लिचफील्ड के रूप में गिरा, जिन्होंने 35 गेंदों में 6 चौके और 2 छक्के लगाकर 48 रन बनाए. फिर तीसरे विकेट के लिए बेथ मूनी और एलिस पेरी ने 18 गेंदों में 23 रनों की साझेदारी की.।

भारत ने श्रीलंका को 10 विकेट से रौंदा, गुरनूर ने झटके 10 विकेट

नई दिल्ली। तेज गेंदबाज गुरनूर बराड़ के 10 विकेट और साई सुदर्शन के शानदार शतक की बदौलत भारत ए ने श्रीलंका ए को दूसरे अनऑफिशियल टेस्ट में 10 विकेट से हरा दिया है. टीम इंडिया पूरी तरह इस मैच में श्रीलंका की टीम पर हावी रही. भारतीय टीम को चौथी पारी में जीत के लिए सिर्फ 33 रन चाहिए थे. टीम इंडिया ने बिना किसी नुकसान के 36 रन बनाकर मैच 10 विकेट से जीत लिया. गुरनूर बराड़ ने पहली पारी में 4 और दूसरी पारी में 6 विकेट चटकाए. मैच की बात करें तो भारत ए ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी थी. पहले बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका ए ने कप्तान सहान अराचिगे के 127 रन की मदद से 366 रन बनाए थे. भारत की तरफ से गुरनूर बरार और सारांश जैन ने 4-4 विकेट लिए. वहीं यश ठाकुर को 2 विकेट मिले।

सरकार ने LNG सप्लाई पर लगा बैन हटाया, होर्मुज से भारत में दौड़ेगी गैस

नई दिल्ली। देश के लिए राहत भरी खबर है. केंद्र सरकार ने L N G की सप्लाई पर लगाए गए आपातकालीन रोक हटा दिए हैं. ये फैसला तब लिया गया है, जब मध्य पूर्व से भारत आने वाली LNG की सप्लाई फिर से पहले जैसी हो गई है. कुछ महीने पहले होर्मुज जलडमरूमध्य में तनाव के कारण गैस की आवाजाही प्रभावित हुई थी, जिसके चलते सरकार को खास इंतजाम करने पड़े थे. अब हालात सुधरने के बाद पाबंदियां हटा दी गई हैं.

मिडिल ईस्ट में तनाव बढ़ने के बाद होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाले LNG जहाजों की आवाजाही प्रभावित हुई थी. इसके कारण भारत में गैस की सप्लाई पर असर पड़ने की आशंका पैदा हो गई थी. ऐसे में सरकार ने मार्च में आपातकालीन नियम लागू किए थे जिससे गैस को पहले जरूरी जगहों तक पहुंचाया जाए. अब जब शांति है और जहाजों की आना- जाना नॉर्मल हो गया है तो इन नियमों की जरूरत नहीं रही. LNG पर लगे रोक हटने से सबसे ज्यादा फायदा उन सेक्टरों को होगा जो प्राकृतिक गैस ही पर निर्भर हैं. इसमें सीएनजी, पीएनजी, फर्टिलाइजर, रिफाइनरी, सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन और कई इंडस्ट्री शामिल हैं. अब यहां पहले की तरह ही गैस की सप्लाई मिल सकेगी।

अदाणी को मिला गोरेगांव में 100000 करोड़ का प्रोजेक्ट

मुंबई। मुंबई में बड़े रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स की कड़ी में अब एक और नाम जुड़ गया है. एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति गौतम अदाणी के अदाणी ग्रुप को गोरेगांव (पश्चिम) स्थित मोतीलाल नगर के पुनर्विकास की जिम्मेदारी मिली हैं. यह इलाका करीब 143 एकड़ में फैला हुआ है. महाराष्ट्र हाउसिंग एंड एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी (MHADA) के मास्टर प्लान के अनुसार, इस मेगा प्रोजेक्ट पर 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया जा सकता है. इसे मुंबई के बड़े रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स में से एक माना जा रहा है. जिससे कई परिवारों को नया आशियाना मिलने वाला हैं. इस प्रोजेक्ट में पुनर्वास और फ्री-सेल दोनों तरह के हिस्से शामिल होने वाले हैं. उम्मीद की जा रही है कि, इस प्रोजेक्ट के तहत इलाके को बड़े स्तर पर विकसित किया जाएगा. इस प्रोजेक्ट के तहत बड़ी संख्या में लोगों के पुनर्वास की योजना बनाई गई है. मास्टर प्लान के मुताबिक 3,702 योग्य निवासियों को 1,600 वर्गफुट के कार्पेट एरिया वाले मुफ्त फ्लैट दिए जाएंगे. वहीं 328 बिजनेस यूनिट्स को करीब 987 वर्गफुट की जगह दी जाएगी. इसके अलावा करीब 1,600 झुग्गी निवासियों को 300 वर्गफुट के घरों में बसाने की योजना है.

मध्यप्रदेश के शिवपुरी में बनेगा मिसाइल इकोसिस्टम

नई दिल्ली। भारत को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने और मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया है. अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने मध्य प्रदेश के शिवपुरी में 2500 करोड़ के बड़े निवेश के साथ दक्षिण एशिया के सबसे बड़े प्राइवेट सेक्टर मिसाइल इकोसिस्टम की आधारशिला रखी है.इस अत्याधुनिक प्रोजेक्ट के तहत एक ही जगह पर कंपोजिट प्रोपेलेंट और टीएनटी का उत्पादन किया जाएगा. टीएनटी एक प्रकार का विस्फोटक है. भारत के निजी क्षेत्र में इस तरह की बड़े पैमाने की क्षमता पहली बार तैयार की जा रही है. अदाणी समूह के इस निवेश से क्षेत्र की आर्थिक और औद्योगिक सूरत बदलने की उम्मीद है. इस परियोजना से लगभग 5000 डायरेक्ट और इनडायरेक्ट कुशल रोजगार पैदा होंगे. इसके साथ ही सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों यानी MSMEs के लिए नए अवसर खुलेंगे, जिससे मध्य प्रदेश देश के एक प्रमुख डिफेंस हब के रूप में स्थापित होगा. यह प्लांट भारतीय सशस्त्र बलों को बड़े पैमाने पर स्वदेशी मिसाइल प्रणालियों को शामिल करने में मदद करेगा।

सावधान! चांदी खरीदने वाले 30% लोग हुए ठगी का शिकार

आपकी चांदी भी तो 'नकली' नहीं?

नई दिल्ली। क्या आप भी चांदी खरीदते हैं, या खरीदने के बारे में सोच रहे हैं? तो सावधान हो जाइये, कहीं आप भी ठगी का शिकार ना हो जाए. क्योंकि हाल ही में जारी एक सर्वे के अनुसार, पिछले पांच सालों में करीब 30 प्रतिशत से भी ज्यादा ग्राहक चांदी खरीदते समय ठगी या धोखाधड़ी का शिकार हो गए हैं. ये आंकड़ा बताता है कि बाजार में कितनी पारदर्शिता है और साथ ही साथ ग्राहकों को सावधान रहने की भी हिदायत देता है.

चांदी पर हॉलमार्किंग

इस सर्वे में ये भी खुलासा हुआ है कि 93 प्रतिशत लोगों ने चांदी के सामान पर हॉलमार्किंग को जरूरी बनाने का समर्थन किया है. जिससे वो और उन जैसे अन्य कई लोग ठगी का शिकार ना हो पाएं. जिसके बाद सरकार ने भी चांदी के गहनों और सामानों के लिए हॉलमार्किंग शुरू की है, जिसे एक डिजिटल पहचान प्रणाली से जोड़ा गया है. ये व्यवस्था 1 सितंबर 2025 से लागू हुई, ताकि सामान की शुद्धता के बारे में पता चल सके. बता दें कि हॉलमार्किंग से सोने या चांदी की शुद्धता पर ऑफिशियल मुहर या निशानी लग जाती है. इस

रिपोर्ट में ये भी बताया गया है कि, 'कुछ ऑफिशियल अपडेट्स के मुताबिक, ग्राहक खुद भी BIS Care मोबाइल ऐप के जरिए कई जरूरी जानकारियां जैसे आर्टिकल टाइप, शुद्धता, हॉलमार्क की तारीख, जांच केंद्र की जानकारी और ज्वेलर का रजिस्ट्रेशन नंबर भी वेरिफाई कर पाएंगे'.

10 में से 3 लोग होते हैं ठगी का शिकार

इस सर्वे में शामिल करीब 8 प्रतिशत लोगों ने बताया कि चांदी खरीदते समय उनके साथ एक बार धोखाधड़ी हुई. वहीं 42 प्रतिशत लोगों ने किसी भी तरह की ठगी की शिकायत नहीं की है. जबकि 27 प्रतिशत लोगों ने इस बारे में साफतौर पर कुछ भी नहीं कहा. इसका मतलब है कि लगभग हर 10 में से 3 लोगों के साथ चांदी खरीदते वक्त ठगी या धोखाधड़ी होती है. इस सर्वे से पता चलता है कि हमें सोना या चांदी खरीदते वक्त कितना सतर्क रहना चाहिए, जिससे किसी भी तरह की ठगी का शिकार ग्राहक ना हो सके. हर उपभोक्ता को विश्वसनीय या प्रमाणिक ज्वेलर के पास से ही चांदी खरीदना चाहिए और जाने से पहले इसकी जानकारी भी रखना चाहिए.

नकटी विवाद : भाजपा बोली- कांग्रेस को गरीब नहीं, करीबियों की चिंता

कांग्रेस सरकार में विधायक कालोनी के लिए हुआ था नकटी का चयन

रायपुर। नकटी में अतिक्रमण हटाने को लेकर पिछले एक सप्ताह से जमकर सियासत हो रही है। कांग्रेस लगातार प्रदेश सरकार पर हमलावर है। करीब सप्ताहभर बाद अब जाकर भाजपा ने कांग्रेस पर पलटवार किया है। भाजपा ने नकटी अतिक्रमण को लेकर कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा है। प्रदेश भाजपा महामंत्री डॉ. नवीन मार्कण्डेय ने पत्रकारवार्ता में कहा कि अतिक्रमण की कार्रवाई को लेकर कांग्रेस अब निम्नस्तरीय राजनीति कर रही है। कांग्रेस को गरीबों से नहीं, बल्कि अपने करीबियों से मतलब है। वहीं, कांग्रेस ने इसे विस्थापितों के जले में नमक छिड़कना बताया है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भी तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर रखने की बात कहीं है।

डॉ. मार्कण्डेय ने कहा कि नकटी का जो प्रकरण चल रहा है, उसकी स्क्रिप्ट बहुत पहले 2020 में पूर्ववर्ती भूपेश सरकार के शासनकाल में लिखी गई थी। उस समय हाउसिंग बोर्ड के जरिए वहां आवासीय कॉलोनी तैयार करने की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी दरम्यान 2022 में वहां आवासीय कॉलोनी बनने की जानकारी मिलते ही 2022-23 में वहां कब्जाधारियों की बाढ़ आ गई। पहले वहां लगभग 3 हेक्टेयर जमीन पर कब्जा था, जिस पर कच्चे मकान चिन्हांकित हुए। आज कई लोगों ने 10 से 17-20 हजार वर्गफीट जमीन पर कब्जा कर लिया है और उन लोगों ने 50 लाख रुपए मूल्य तक के मकान, बाड़ी बना ली है।

डॉ. मार्कण्डेय ने कहा कि अब इस मामले को कांग्रेस गलत दिशा में ले जाकर लोगों को उकसा रही है। कांग्रेसी नेताओं को इस बात का जवाब देना चाहिए कि क्या अवैध कब्जों को वे प्रश्रय देते हैं या देना चाहते हैं? जब कांग्रेस की सरकार थी तो सभी शासकीय भूमि को बेचने के लिए एक नोटिफिकेशन जारी किया था और उस समय कांग्रेस ने बड़े-बड़े नेता तक ने एकड़ों में रियायती दर खरीदें।

भूपेश बोले- छेड़ीखेरी में दिए प्लॉट

भाजपा के आरोपों पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि नकटी गांव में लोगों को बेघर करने की स्क्रिप्ट कांग्रेस ने नहीं, बल्कि भाजपा सरकार ने लिखी है। भूपेश बघेल ने कहा कि कांग्रेस शासनकाल में विधायकों के लिए प्लॉट आवंटन का प्रस्ताव जरूर आया था, लेकिन सरकार ने ऐसा स्थान चुना जहां लोगों के मकान न टूटें। उन्होंने बताया कि छेरीखेड़ी क्षेत्र में पहले ही प्लॉट आवंटित किए जा चुके थे। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकारियों ने कई स्थानों का प्रस्ताव सरकार के सामने रखा था, लेकिन प्रभावित परिवारों के घरों को नुकसान न पहुंचे, इसे ध्यान में रखते हुए वैकल्पिक स्थान का चयन किया गया था।

पत्रकार वार्ता लेने से भाजपा का पाप नहीं धुलेगा - कांग्रेस

रायपुर। नकटी तोड़फोड़ मामले में भाजपा के द्वारा की जा रही पत्रकार वार्ताओं से भाजपा के गरीबो के घर उजाड़ने का पाप नहीं धुलेगा। कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा की भाजपा के नेता अनुराग सिंह देव झूठ परोस रहे उनके ही विभाग के मंत्री ओपी चौधरी सहित तमाम बड़े अधिकारी खुलासा कर चुके है साय सरकार नकटी में विधायक आवास बनाने जा रही है। सरकार बताये उसकी वहा कुछ बनाने की योजना नहीं थी तो गरीबो के मकान क्यों तोड़े गए। कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि नकटी गांव में 85 आवास एवं प्रधानमंत्री आवास के मकानों की तोड़-फोड़ साय सरकार और भाजपा के गरीब विरोधी चेहरे को उजागर करता है। नकटी की तोड़-फोड़ अमानवीय अनैतिक तो है ही यह तोड़-फोड़ गैरकानूनी भी है। अमूमन मानवीय आधार पर बारिश के समय विस्थापन की कार्यवाही नहीं की जाती है, यह छत्तीसगढ़ में 10 जून से 15 जून मानसून आने का समय माना जाता है। इस समय के बाद राज्य के जमीनों का सीमांकन भी नहीं किया जाता है। नकटी गांव में तोड़-फोड़ की कार्यवाही 29 जून को की गयी है, जो पूरी तरह से गलत और गैरकानूनी प्रक्रिया है। इस कार्यवाही में शामिल अधिकारियों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्यवाही की जाए। सरकार कानूनी कार्यवाही नहीं करेगी तो हम इस मामले को लेकर कोर्ट भी जायेंगे। किसी भी विस्थापन की कार्यवाही के पहले व्यवस्थापन होना था, सरकार ने बिना व्यवस्थापन कार्य को पूरा किये वहां पर रह रहे लोगो को समान हटाने का अवसर दिये बिना तोड़-फोड़ किया।

गारंटी की तरह अटल विश्वास पत्र भी निकला जुमला, जलभराव की समस्या से नही मिली मुक्ति

रायपुर। रायपुर में बारिश की पानी से कालोनी से लेकर बस्ती,सड़क तक डूबने के लिए ट्रिपल इंजन सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि निकाय चुनाव में भाजपा ने अटल विश्वास पत्र जारी कर वादा किया था कि ट्रिपल इंजन की सरकार में बारिश की पानी से उत्पन्न जल भराव की समस्या का निदान किया जायेगा। मीनल चौबे ने दावा किया था कि राजधानी में कहाँ कहाँ जलभराव की समस्या है उसे चिन्हांकित कर लिया गया है और ट्रिपल इंजन की सरकार बनते ही उन समस्याओं को हल कर लिया जायेगा। लेकिन अटल विश्वास पत्र भी मोदी की गारंटी की तरह जनता के लिए जुमला साबित हो गया। जलभराव की समस्या हल करने ट्रिपल इंजन की सरकार ने कोई काम नही किया है। जिसका खामियाजा रायपुर शहर के निवासियों को उठाना पड़ रहा है। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा रायपुर शहर के लगभग सभी बस्तियां एवं पाश कालोनी में बारिश के कारण नाले का गंदा पानी, कीचड़ ,गन्दगी और जहरीले जीव जंतु घरों में घुस गये। आम लोगो को छोटे छोटे मासूम बच्चों एवं बुजुर्गो को साथ लेकर रातभर घरों में घुसे पानी को बाल्टी एवं अन्य बर्तनों से फेंकना पड़ा।

ढाई साल में सिर्फ योजनएं बंद की कुछ नया शुरू नहीं किया: बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भाजपा की सरकार रिमोट से चलने वाली अनुभवहीन सरकार है। जिसके पास प्रदेश को लेकर कोई विजन रोड मैप नही है जिसका नुकसान प्रदेश को हुआ है। पूर्व कांग्रेस सरकार ने अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं शुरू की जिससे प्रदेश खुशहाल हुआ था। कांग्रेस सरकार की योजनाओं को अन्य राज्य देखने आते थे। नीति आयोग तारीफ करता था एवं अन्य राज्यो को भी शुरू करने सलाह देता था। उस दौरान आईआईएम जैसे अनेक संस्थान के प्रोफेसर छात्र उन योजनाओं पर शोध करते थे। बीते ढाई साल में भाजपा की सरकार ने कोई नयी योजना शुरू नही की बल्कि पूर्ववर्ती सरकार की 17 योजनाओं को बंद किया एवं 20 योजनाओं का नाम बदलकर जारी रखा है। यही वजह है भाजपा सरकार को आईआईएम में प्रशिक्षण लेने पड़ रहा है ये इस सरकार की असफ़लता का प्रमाण है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भाजपा सरकार का ये तीसरा चिंतन शिविर है सवाल ये उठता है इसके पहले हुए दो चिन्तन शिविर में आईआईएम के प्रशिक्षण से क्या सीखा? जो सीखा उसे धरातल पर लागू क्यो नही किया। क्योंकि सरकार की अक्षमता के कारण हर वर्ग में गहरी नाराजगी, मायूसी झलक रही है प्रशासनिक अराजकता से प्रदेश थर्रा रहा है। वित्तीय अनियमितता के कारण राज्य पर कर्जभार बढ़ा है बीते ढाई साल में हर माह 2000 करोड़ रु से अधिक कर्ज लिया जा रहा है। कोई नया विकास कार्य कोई नई परियोजना शुरू नही हुई है। स्थिति बेहद गम्भीर है जनता स्वास्थ्य शिक्षा रोजगार सुरक्षा जैसे मूलभूत की समस्याओं से जूझ रही है। चुनावी गारंटी में कोई काम हुआ नही है। ऐसे में सरकार के प्रशिक्षण का क्या औचित्य?

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भाजपा सरकार ने ढाई साल में सब गुड़ गोबर करने के बाद चिंतन शिविर में सरकार चलाने के गुड़ सीखने का ढोंग कर रही है। अब सरकार का फेयरवेल की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। भारतीय जनता पार्टी ने पिछले ढाई सालों में प्रदेश की जनता को निराश किया है। कोई भी विकास कार्य चालू नहीं कर पाये, युवाओं को निराश किया है, एक भी शिक्षक की भर्ती नहीं कर पाई, युवाओं को रोजगार नहीं दिया, किसानों से धोखा किया।

छत्तीसगढ़ की स्वास्थ्य व्यवस्था देश में सबसे ज्यादा बदहाल

रायपुर। भाजपा की सरकार बनने के बाद राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था बदहाल हो गयी है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि यह बेहद चिंता का विषय है कि स्वास्थ सुविधा देने में छत्तीसगढ़ सरकार अन्य राज्यों की अपेक्षा फिसड्डी है। छत्तीसगढ़ में जिन मरीजों की मौते हो रही है। उनमें से 60 प्रतिशत से अधिक मरीजो की मौत केवल इसलिये हो रही है कि उनका समय पर ईलाज एक प्रशिक्षित डॉक्टर और स्टाफ से नहीं हो पाता है। सेंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (एसआरएस) की हालिया रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि छत्तीसगढ़ में होने वाली कुल मौतो के पीछे एक बड़ा कारण ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित डॉक्टरो की कमी है। पूरे देश में छत्तीसगढ़ इस प्रकार की मौतो के मामलो में बिहार और झारखंड के बाद तीसरे स्थान पर है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा सरकार की प्राथमिकता में लोगो का ईलाज है ही नही, भाजपा सरकार के लिये स्वास्थ्य विभाग केवल भ्रष्टाचार करने का अड्डा मात्र बना हुआ है। प्रदेश के वर्तमान 10 मेडिकल कालेजो में 2660 स्वीकृत पदो में से 1290 पद लगभग आधे खाली पड़े है। ऐसे में मरीजो का कैसे ईलाज होगा। स्वास्थ्य केन्द्र, उपस्वास्थ्य केन्द्रो में 65 प्रतिशत स्थानों तथा जिला अस्पतालो में 60 प्रतिशत पद खाली पड़े है। राज्य के सरकारी अस्पतालो में ईलाज कम भ्रष्टाचार अधिक होता है।

भिलाई में दो बच्चियों से दुष्कर्म सुशासन की पोल खोल रहे : वंदना

रायपुर। भिलाई छावनी थाना क्षेत्र में दो मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटना को लेकर प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता वंदना राजपूत ने कहा कि यह घटना पूरे प्रदेश को झकझोर दिया है। यह केवल एक जघन्य अपराध नहीं, बल्कि भाजपा सरकार की कानून-व्यवस्था और बच्चियों की सुरक्षा में पूरी तरह विफलता का प्रमाण है। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता वंदना राजपूत ने कहा कि सरकार "सुशासन" और "सुरक्षा" के दावे करती है, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि प्रदेश में बेटियां और मासूम बच्चियां असुरक्षित हैं। प्रतिदिन 8 से 9 महिलाएं और बच्चियां दुष्कर्म के शिकार हो रहे हैं। अपराधियों में कानून का भय खत्म होता जा रहा है, और सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। कांग्रेस ने इस घटना की निष्पक्ष, त्वरित और फास्ट-ट्रैक जांच की मांग करते हुए दोषियों को कठोरतम सजा देने की मांग की है। साथ ही पीड़ित बच्चियों और उनके परिवार को तत्काल चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक सहायता और पूर्ण सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता वंदना राजपूत ने पीड़ित परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसी घटनाएं किसी भी सभ्य समाज में अस्वीकार्य हैं। बढ़ते आपराध को लेकर के भाजपा को इस विषय पर विशेष चिंतन करना चाहिए।

नए नियम में नियोक्ता/कंपनी का अंशदान, 12 प्रतिशत की बाध्यता हटाकर मात्र 1,800 किया गया

ईपीएफओ नियम में बदलाव से कर्मचारियों को नुकसान

रायपुर। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के लिए जारी नए नियमों को केंद्र सरकार द्वारा थोपा गया कर्मचारी विरोधी निर्णय बताते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख्य प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि टेक-होम सैलरी बढ़ने का लालच और तात्कालिक लाभ का झांसा देकर करोड़ों कर्मचारियों और उनके परिवार के भविष्य पर प्रहार किया है, कॉर्पोरेट परस्त नीतियों के चलते, निजी कंपनियों को लाभ पहुंचाने के लिए ही यह षडयंत्र रचा गया है।

मोदी सरकार ने नियोक्ता के अंशदान के दायित्व, मूल वेतन के 12 प्रतिशत की बाध्यता को हटाकर मात्र 1800 रुपए प्रति माह तक सीमित कर दिया है। अब नए नियमों के तहत कर्मचारी और कंपनी का 12 प्रतिशत योगदान केवल वैधानिक वेतन सीमा, जो वर्तमान में 15,000 रुपये है के 12 प्रतिशत तक ही अनिवार्य है, जो कि 1800 रुपये महीने होता है, इसके ऊपर के मूल वेतन पर पीएफ कटौती पूरी तरह से कर्मचारियों और नियोक्ताओं की इच्छा पर छोड़ दिया गया है, इससे भविष्य के लिए जुड़ने वाली सामाजिक सुरक्षा राशि घट जाएगी, टेक-होम सैलरी (Take-home salary) बढ़ने का प्रलोभन देकर कर्मचारियों के रिटायरमेंट फंड को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख्य प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि पुरानी ईपीएफ योजना 1952 के तहत पीएफ कटौती पर फैसले का अधिकार कर्मचारियों के पास था, लेकिन नए नियम में अब यह अधिकार सरकार ने कर्मचारियों से छीनकर कंपनियों को दे दिया है। पहले 12 प्रतिशत तक पीएफ कटौती चुनने का अधिकार कर्मचारियों को था और उतनी ही राशि नियोक्ता/कंपनी के द्वारा संबंधित कर्मचारी के पीएफ फंड में जमा करने की बाध्यता थी, जिसे अब कंपनियों की मर्जी पर छोड़ दिया गया है, कानूनी बाध्यता केवल 18 सौ रुपए की रह गई है। प्रतिमाह 15000 से अधिक वेतन वाले कर्मचारियों को नए नियम से बड़ा नुकसान है, यदि किसी कर्मचारी का वेतन 50 हजार है तो उसका 12 प्रतिशत 6000 होता है, जो नियोक्ता अंशदान के तौर पर देने बाध्य था लेकिन अब कंपनियों का यह दायित्व 1800 तक ही सीमित कर दिया गया है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी का मुख्य प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि नियोक्ता द्वारा मात्र 18 सौ रुपए महीने ही पीएफ में जमा होगा तो रिटायरमेंट के लिए जमा होने वाला पैसा बहुत ही कम होगा।

'सुपर अल नीनो' की चुनौती

धमतरी में कृषक मित्रों को मिला अल्प वर्षा से निपटने का गुरुमंत्र

रायपुर। जलवायु परिवर्तन और 'सुपर अल नीनो' (Super El Niño) के कारण संभावित अल्प एवं अनियमित वर्षा की चुनौती से निपटने के लिए धमतरी के कृषि विभाग में शुक्रवार को एक महत्वपूर्ण जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक्सटेंशन रिफॉर्म्स 'आत्मा' योजना के तहत आयोजित इस विशेष सत्र में जिलेभर के कृषक मित्रों को आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिक खेती और फसल बीमा के प्रति जागरूक किया गया, ताकि वे इस ज्ञान को गांव-गांव तक पहुंचा सकें।

प्रशिक्षण में कृषि वैज्ञानिकों और विभागीय अधिकारियों ने कम वर्षा की स्थिति में फसलों को बचाने के लिए कई महत्वपूर्ण रणनीतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कृषक मित्रों को प्रेरित किया गया कि वे अपने क्षेत्रों में जाकर किसानों को समय रहते जागरूक करें। वैज्ञानिकों ने विपरीत मौसम की परिस्थितियों से निपटने के लिए पारंपरिक फसलों के स्थान पर कम अवधि में तैयार होने वाली धान की किस्मों, दलहनी (दालें) और तिलहनी फसलों को प्राथमिकता देने की सलाह दी। पानी की बचत के लिए वैज्ञानिक तरीके से 'डायरेक्ट सीडेड राइस' (धान की सीधी बुवाई) तकनीक अपनाने पर जोर दिया गया। इसी तरह खेतों में उपलब्ध पानी का सही उपयोग, संतुलित पोषण प्रबंधन और मिट्टी की नमी को लंबे समय तक बनाए रखने के व्यावहारिक उपाय बताए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनुविभागीय कृषि अधिकारी, कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि अभियांत्रिकी विशेषज्ञ, आत्मा के डिप्टी प्रोजेक्ट डायरेक्टर, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक सहित आत्मा योजना के जिला व अधिकारी- कर्मचारी और कृषक मित्र उपस्थित थे।

फसल बीमा बनेगा किसानों का सुरक्षा कवच

प्राकृतिक आपदाओं और सूखे के जोखिम से किसानों को आर्थिक सुरक्षा देने के लिए 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। योजना के जिला प्रबंधक ने धान, उड़द, मूंग, कोदो, कुटकी और रागी जैसी अधिसूचित फसलों की बीमा प्रक्रिया, पात्रता और अंतिम तिथि की विस्तृत जानकारी दी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय 112 करोड़ के कार्यों का करेंगे लोकार्पण-भूमिपूजन

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय 6 जुलाई को रायपुर जिले के समोदा में 112 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन करेंगे। इनमें 21 करोड़ 67 लाख रुपए के 67 कार्यों का लोकार्पण और 90 करोड़ 34 लाख रुपए लागत के 29 निर्माण कार्यों के भूमिपूजन शामिल हैं। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन व लोक निर्माण मंत्री श्री अरुण साव कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे।

वन एवं पर्यावरण तथा रायपुर जिले के प्रभारी मंत्री श्री केदार कश्यप, स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री गुरु खुशवंत साहेब और सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आरंग क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में लोक निर्माण विभाग के 9 करोड़ 43 लाख रुपए के तीन कार्यों, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के 79 लाख रुपए के पांच कार्यों, नगर पंचायत समोदा के 6 करोड़ 67 लाख रुपए के 20 कार्यों तथा आरंग नगर पालिका में 4 करोड़ 78 लाख रुपए के 39 कार्यों का लोकार्पण करेंगे। श्री साय लोक निर्माण विभाग द्वारा किए जाने वाले 61 करोड़ 11 लाख रुपए लागत के 8 कार्यों, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के दो करोड़ 54 लाख रुपए के 11 कार्यों एवं समोदा नगर पंचायत के 8 करोड़ 70 लाख रुपए के 9 कार्यों का भूमिपूजन करेंगे। वे स्वास्थ्य विभाग द्वारा नवा रायपुर के सेक्टर-17, कोटरा भाठा में 18 करोड़ रुपए की लागत से बनाए जा रहे 100 बिस्तर अस्पताल का भी भूमिपूजन करेंगे।

महिला समूहों के 'विष्णु भोग' चावल की खुशबू पहुंची पुलिस मुख्यालय तक

पुलिस महानिदेशक अरुण देव गौतम को भेंट किया गया जीपीएम की विशिष्ट पहचान 'विष्णु भोग' चावल

रायपुर। गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले के प्रवास पर पहुंचे पुलिस महानिदेशक श्री अरुण देव गौतम का स्वागत स्थानीय पहचान और कृषि समृद्धि के प्रतीक 'विष्णु भोग' चावल से किया गया। कलेक्टर डॉ. संतोष कुमार देवांगन ने उन्हें जिले की विशिष्ट पहचान माने जाने वाले 'विष्णु भोग' चावल का पैकेट भेंट कर सम्मानित किया। यह चावल जिले में बिहान योजना के अंतर्गत महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा तैयार किया जा रहा है, जो ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और आजीविका संवर्धन का सफल उदाहरण बनकर उभरा है। इस अवसर पर कलेक्टर डॉ. संतोष कुमार देवांगन ने पुलिस महानिदेशक को 'विष्णु भोग' चावल की विशेषताओं, उसकी गुणवत्ता तथा इसके उत्पादन और विपणन में महिला स्व-सहायता समूहों की सक्रिय भागीदारी की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह पहल न केवल स्थानीय कृषि उत्पादों को नई पहचान दिला रही है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर उनकी आय में भी वृद्धि कर रही है। पुलिस महानिदेशक श्री अरुण देव गौतम ने महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा किए जा रहे इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'विष्णु भोग' चावल केवल एक कृषि उत्पाद नहीं, बल्कि महिलाओं की मेहनत, आत्मनिर्भरता और ग्रामीण आजीविका सशक्तिकरण का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि ऐसे नवाचार और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने से जिले की विशिष्ट पहचान राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित होती है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नई मजबूती मिलती है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि महिला समूहों द्वारा गुणवत्ता और परंपरा के साथ तैयार किए जा रहे ऐसे उत्पाद भविष्य में प्रदेश ही नहीं, बल्कि देशभर में अपनी अलग पहचान बनाएंगे।

मुख्यमंत्री हेल्पलाइन से 85 वर्षीय जॉन क्रूज़ मिंज का वर्षों पुराना इंतजार हुआ खत्म

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में संचालित मुख्यमंत्री हेल्पलाइन आम नागरिकों की समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी समाधान का भरोसेमंद माध्यम बन रही है। जशपुर जिले के ग्राम जोकबहला (ग्राम पंचायत नारायणपुर) निवासी 85 वर्षीय जॉन क्रूज़ मिंज की वर्षों पुरानी समस्या का समाधान इसका प्रेरक उदाहरण है। जॉन क्रूज़ मिंज लंबे समय से आधार कार्ड बनवाने का प्रयास कर रहे थे। कई बार आधार नामांकन केंद्र जाने के बावजूद फिंगरप्रिंट का मिलान नहीं होने तथा अन्य तकनीकी कारणों से उनका आवेदन निरस्त हो जाता था। आधार कार्ड नहीं होने के कारण उन्हें बैंकिंग सेवाओं, पेंशन, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, आयुष्मान भारत सहित विभिन्न शासकीय योजनाओं का लाभ लेने में लगातार कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।

आखिरकार उन्होंने 19 जून को मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत प्राप्त होते ही संबंधित विभाग ने मामले को प्राथमिकता देते हुए आवश्यक समन्वय किया और तकनीकी बाधाओं को दूर करने के लिए त्वरित कार्रवाई शुरू की। विभाग की सक्रिय पहल का परिणाम यह रहा कि मात्र तीन दिनों के भीतर, 22 जून को जॉन क्रूज़ मिंज का आधार

कार्ड सफलतापूर्वक बन गया। वर्षों से चली आ रही उनकी समस्या का समाधान होने पर उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, जिला प्रशासन के प्रति हार्दिक आभार जताया। जॉन क्रूज़ मिंज ने कहा कि आधार कार्ड नहीं होने के कारण उन्हें कई आवश्यक सेवाओं और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में परेशानी होती थी। अब आधार कार्ड मिलने के बाद वे बैंकिंग सेवाओं, पेंशन, राशन तथा आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकेंगे। यह सफलता मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जनसमस्याओं के त्वरित, संवेदनशील और समयबद्ध निराकरण के प्रति शासन की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

विकास का नया सेतु

पिनगुंडा नाला पर बनी पुलिया ने बदली ओरछा की तकदीर

रायपुर। अबूझमाड़ के दुर्गम अंचलों में जब मानसून दस्तक देता था, तो वह अपने साथ प्राकृतिक सुंदरता ही नहीं, बल्कि ओरछा क्षेत्र के हजारों ग्रामीणों के लिए दुश्वारियों का दौर भी लेकर आता था। हर साल बारिश के चार महीने यहाँ के लोगों के लिए किसी परीक्षा से कम नहीं होते थे। लेकिन इस साल तस्वीर जुदा है। नारायणपुर के ओरछा क्षेत्र में पिनगुंडा नाला पर बनी नई बॉक्स पुलिया ने विकास की एक नई इबारत लिख दी है। यह पुलिया सिर्फ कंक्रीट का ढांचा नहीं, बल्कि क्षेत्र के ग्रामीणों के लिए खुशहाली और कनेक्टिविटी का एक नया 'लाइफलाइन' बन चुकी है।

संकट का सबब था पिनगुंडा नाला

पल्ली-छोटेडोंगर-ओरछा मार्ग पर स्थित पिनगुंडा नाला सालों से नारायणपुर और ओरछा के बीच एक अभेद्य दीवार बना हुआ था। मानसून के आते ही नाला उफान पर आ जाता, जिससे तहसील मुख्यालय ओरछा सहित दर्जनों गांवों का जिला मुख्यालय से संपर्क पूरी तरह कट जाता था। उफनते नाले के कारण एम्बुलेंस नहीं आ पाती थी और गंभीर मरीज समय पर अस्पताल नहीं पहुँच पाते थे। नदी-नाले

पार करने के जोखिम के कारण विद्यार्थियों की पढ़ाई हफ्तों बाधित रहती थी। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति ठप हो जाती थी और स्थानीय ग्रामीणों की कृषि उपज मंडियों तक नहीं पहुँच पाती थी।

258 लाख रुपए की लागत से मिला स्थायी समाधान

ग्रामीणों की इस दशकों पुरानी और बुनियादी समस्या को संवेदनशीलता से लेते हुए शासन द्वारा यहाँ एक सुदृढ़ पुलिया निर्माण की कार्ययोजना तैयार की गई। इस आधुनिक बॉक्स ब्रिज के बन जाने से बारिश के दिनों में भी नारायणपुर से ओरछा तक का मार्ग पूरी तरह निर्बाध और सुरक्षित हो गया है। घंटों का इंतजार और मीलों लंबा वैकल्पिक सफर अब गुजरे जमाने की बात हो गई है। इस एकल परियोजना ने ओरछा क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है। सुरक्षित और सुगम मार्ग मिलने से ग्रामीणों के ईंधन और कीमती समय, दोनों की बचत हो रही है। आपातकालीन चिकित्सा सेवाएँ अब बिना किसी रुकावट के सीधे गांवों तक पहुँच रही हैं। साथ ही शासकीय योजनाओं का क्रियान्वयन भी आसान हुआ है।

ओटीटी से हटाई गई दिलजीत दोसांझ की फिल्म 'सतलुज'

सोशल मीडिया पर बोले- 'बैन होने से पहले देख डालो'

पंजाबी सिंगर दिलजीत दोसांझ को अपनी एक्टिंग के साथ ही बेबाकी के लिए भी जाना जाता है. वो अक्सर अपनी फिल्मों के जरिए भी कई बार कुछ ऐसा कर जाते हैं कि विवादों में आ जाते हैं. इन दिनों वो अपनी फिल्म 'सतलुज' को लेकर चर्चा में हैं और अब खबर सामने आ रही है कि उनकी इस फिल्म को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 से हटा दिया गया है. वहीं, इस पर दिलजीत ने जो रिएक्शन दिया है वो भी वायरल हो रहा है. दिलजीत दोसांझ 'सतलुज' को लेकर लंबे समय से चर्चा में हैं. इसे पहले थिएटर में रिलीज किया जाना था लेकिन सेंसर बोर्ड (CBFC) ने फिल्म में कई कट्स लगाने की मांग की थी. ये सालों तक सेंसर बोर्ड में सर्टिफिकेशन के लिए अटकी रही थी लेकिन सालों तक अटकने के बाद इसे दो दिन पहले ही 3 जुलाई को जी5 पर रिलीज किया गया था. हालांकि, पहले इसका टाइटल 'पंजाब 95' था, जिसे बदलकर 'सतलुज' कर दिया गया. फिल्म को बिना किसी शोर शराबे के चुपचाप जी5 पर रिलीज किया गया था लेकिन अब इसे वहां से भी हटा दिया गया है. ये सरप्राइजिंगली हुआ और फैंस इसे अचानक हटाने की वजह से हैरान हैं. हालांकि, ओटीटी प्लेटफॉर्म की ओर से जानकारी दी गई है कि वो लीगल तरीका अपनाकर इस फिल्म को फिर स्ट्रीम होने की अनुमति दिलाएंगे. वहीं, फिल्म 'सतलुज' को हटाए जाने के बाद दिलजीत दोसांझ का भी रिएक्शन वायरल हो रहा है. उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरी पर फिल्म के एक सीन का स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए लिखा, 'इसे जल्दी से देख डालिए. इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये मॉर्डन टाइम्स की एक बेहतरीन फिल्म है।

फेक हैरेसमेंट के आरोपों के बीच 'लॉक अप 2' में हुई शिल्पा शिंदे की एंट्री

कुछ महीनों में 'भाबीजी घर पर हैं' फेम शिल्पा शिंदे विवादों में घिरी रहीं. साल 2016 में उन्होंने शो के प्रोड्यूसर पर गंभीर आरोप लगाए थे, जिसके करीब 10 साल बाद उन्होंने इसका खुलासा किया कि वो सब झूठ था. इस कन्फेशन के बाद उन्हें सोशल मीडिया पर कई आलोचनाओं का सामना करना पड़ा. इसी बीच अब वो फिर से सुर्खियों में आ गई हैं और नेटफ्लिक्स के पॉपुलर शो 'लॉक अप 2' में पहली वाइल्ड कार्ड एंट्री के रूप में कदम रख चुकी हैं. हाल ही में नेटफ्लिक्स ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें उन्होंने शिल्पा शिंदे की एंट्री का ऐलान किया. वीडियो में शिल्पा ने लॉक अप का यूनिफॉर्म पहना है और तेवर दिखाते हुए कहती हैं, 'सुना है सबलोग अंदर अपनी-अपनी गद्दी जमाए बैठे हैं. लेकिन उन्हें कह दो, जब जब तक कोई बाहर का अंदर कदम नहीं रखता, तब तक ही उनका राज चलता रहेगा.' वहीं नेटफ्लिक्स ने शिल्पा के शो में एंट्री के बाद आने वाले एपिसोड का प्रोमो शेयर किया, जहां शो के कंटेस्टेंट्स इनसिक्योर नजर आएं. प्रोमो की शुरुआत होती है खाने से, जो पानी की तरह है. इसी बीच राम कपूर कहते हैं कि वो ये खाना नहीं खाने वाले हैं. तब रितेश देशमुख सुनीता आहूजा को डांटते हैं कि यहां आपको दूसरों का नहीं, बल्कि खुद का ध्यान रखना होगा. वहीं राम कपूर ने गुस्से में कहा कि उन्हें शो से बाहर कर दें।

आमिर खान ने एक्स वाइफ-बच्चों की मौजूदगी में की तीसरी शादी

आमिर खान पिछले काफी समय से अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में हैं. वो गौरी स्प्रैट को डेट करने की वजह से सुर्खियों में थे. एक्टर ने अपने 60वें जन्मदिन के मौके पर गौरी स्प्रैट संग रिलेशनशिप का खुलासा किया था. इसके साथ ही एक्टर ने अब 5 जुलाई को गौरी के साथ प्राइवेट सेरेमनी में शादी कर ली है. ये उनकी तीसरी शादी है. शादी के जश्न में केवल परिवार के लोग एक्स वाइफ और बच्चों के साथ ही राज ठाकरे समेत मुकेश अंबानी तक पहुंचे थे.

आमिर खान और गौरी ने अपनी वेडिंग प्राइवेट सेरेमनी में की. इस फंक्शन को उनके घर पर ही ऑर्गेनाइज किया गया था. इस दौरान कपल ने ना तो निकाह किया और ना ही सात फेरे लिए. उन्होंने रजिस्टर मैरिज की. आमिर और गौरी ने बच्चों और परिवारवालों के सामने रजिस्टर मैरिज की. उनके वेडिंग फंक्शन में बेटी दामाद समेत अन्य लोग पहुंचे थे.आमिर खान अपनी तीसरी शादी में काफी खुश दिखे. उनकी शादी की चमक उनके चेहरे पर साफ तौर से देखने के लिए मिली. आमिर और गौरी ने इस दौरान रजिस्टर मैरिज तो की साथ ही रिंग भी एक्सचेंज की. शादी पूरी होने के बाद आमिर खान गौरी के हाथों पर किस करते और उनके बेटे पर भी प्यार लुटाते दिखे. वहीं गौरी भी चहकती दिखीं. इसके अलावा अंगूठी पहनाने के बाद आमिर खान और गौरी साथ में ढोल पर थिरकते हुए भी दिखे. इस दौरान आमिर खान दोस्तों के साथ जमकर नाचते दिखे फिर वो गौरी को कसकर खुशी से गले भी लगाते दिखे. वहीं, गौरी ने भी प्यार लुटाने और जाहिर करने में कोई कसर नहीं रखी. एक-दूसरे को गले लगाने के बाद आमिर ने गौरी को किस भी किया. बहरहाल, अगर वेडिंग फंक्शन के लिए आमिर खान और गौरी के लुक की बात की जाए तो आमिर को धोती कुर्ते में दूल्हा बने देखा गया था. इसमें उनका लुक देखते ही बन रहा था. इसके साथ ही आमिर खान के लुक में दिलचस्प बात ये थी कि उनके एक पैर में पायल देखने के लिए मिली. आमिर की पायल ने लोगों का ध्यान खींच लिया. इसके साथ ही गौरी को भी सादगी भरे लुक में दुल्हन बने देखा गया.

34 करोड़ के पार हुई 'अल्फा'

आलिया भट्ट, शरवरी वाघ, अनिल कपूर और बॉबी देओल फिल्म 'अल्फा' के जरिए स्क्रीन शेयर करते हुए नजर आए. इसमें उनकी एक्टिंग को लोगों ने काफी पसंद किया. आलिया और शरवरी की जोड़ी को भी प्यार दिया. लेकिन फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धीमी शुरुआत की. हालांकि, वीकेंड तक आते-आते 'अल्फा' ने रफ्तार पकड़ ली. चलिए बताते हैं तीसरे दिन का कलेक्शन और रिकॉर्ड.

'अल्फा' जब सिनेमाघरों में रिलीज हुई तो इसे लोगों और क्रिटिक्स की ओर से मिली जुली प्रतिक्रिया मिली. फिल्म ने धीमी शुरुआत की और सैकनिल्क के अनुसार, ओपनिंग डे पर महज 9.25 करोड़ का ही कलेक्शन कर पाई. हालांकि, वीकेंड तक आते-आते इसने रफ्तार पकड़ ली. फिल्म ने दूसरे दिन यानी कि शनिवार को 11.50 करोड़ का बिजनेस किया.

अब फिल्म को तीसरे दिन यानी कि रविवार की छुट्टी का भी बंपर फायदा मिला.सैकनिल्क के मुताबिक, फिल्म ने रात 10.30 बजे तक 13.25 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है. इसके बाद फिल्म का इंडिया नेट कलेक्शन 34 करोड़ तक पहुंच गया है. 'अल्फा' ने ओपनिंग वीकेंड पर बंपर कमाई कर ली है. धीमी रफ्तार के बाद भी ये 35 करोड़ के करीब पहुंच गई है. जबकि फिल्म ने वर्ल्डवाइड 50 करोड़ का आंकड़ा भी पार कर लिया है. इसी के साथ ही इसने ओपनिंग वीकेंड पर 2026 की 10 बड़ी फिल्मों के लाइफटाइम इंडिया कलेक्शन को पछाड़ दिया है।

प्रिंस और युविका के रिश्ते में आई दरार?

टीवी एक्टर प्रिंस नरूला अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में आ गए हैं. इन दिनों खबरें आ रही हैं कि प्रिंस और उनकी पत्नी युविका चौधरी के बीच के रिश्ते ठीक नहीं चल रहे हैं. साथ ही तलाक को लेकर भी कई बातें सामने आ रही हैं, जिससे उनके फैंस परेशान हो गए हैं और कई सवाल कर रहे हैं. हाल ही में प्रिंस नरूला और युविका चौधरी ने एक-दुसरे को इंस्टाग्राम पर अनफॉलो पर दिया था, जिसके बाद उनके अलग होने और तलाक की खबरें सामने आई. सभी को लगा कि शायद प्रिंस और युविका के बीच का रिश्ता ठीक नहीं चल रहा है. लेकिन अब प्रिंस नरूला और युविका चौधरी ने सोशल मीडिया पर साथ में एक वीडियो शेयर की, जिसमें दोनों एस्ट्रोलॉजी ऐप को प्रमोट करते हुए नजर आए. साथ ही अपने रिश्ते पर बात भी की, जिससे साफ हो गया कि प्रिंस और युविका अलग नहीं हो रहे हैं।

शक्ति की आस्था का केन्द्र है झरण मैया का दरबार

प्रियम्वदा पाध्ये

छत्तीसगढ़ सदा धार्मिक आस्था का केंद्र रहा है यहाँ के हर जिले में प्राचीन मंदिर एवं पुरातात्विक धरोहर देखने को मिलती है। ओड़ान के हर कोने में स्थित कलचुरी युगीन स्थापत्य और संस्कृति रची बसी है इन्ही में से एक है बालोद जिले से 25 किलोमीटर आगे गाँव अम्बागढ चौकी के पास स्थित झरण माता का मंदिर। यह साधना नवरात्रि धर्म पर माता के दर्शन करने दूर दूर से श्रद्धालु आते हैं। मंदिर की प्रविष्ठता के बारे में स्थानीय लोगों का कहना है कि हर नवरात्र पहले ओड़ान के आदिवासी पूजा पाठ किया करते थे। धीरे धीरे नवरात्रि की महिमा इस पूरी होने पर दूर दूर भक्त आने लगे। इस स्थल पर एक प्राचीन कुंड है जिसकी गहराई लगभग 20 फीट से अधिक है। पत्थरों से पहाड़ी धार बहती हुई कुंड में गिरती है। झरने का यह शिखर बालोद के सोंडवाड़ से अंबागढ़ होते हुए वनांचल क्षेत्र में आता है। इस प्राकृतिक झरने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, इस अंचल बहने झरने के कारण मंदिर का नाम झरण मैया पड़ा, क्योंकि यह क्षेत्र पहाड़ी कलकल मुनि के कारण इसका नाम वनांचल पड़ा। पुराने कुंड के पास प्राचीन शिवलिंग नंदी, घोड़ा, हाथी एवं पीनक के पत्थर स्वरूप अंकित हैं। इन प्राचीन आकृतियों को आदिवासी लोग पत्थरों पर रखकर पूजा करते थे। मंदिर परिसर (झरण माता मैया की महिमा अपरंपार) सर्वोत्कृष्ट रूप से ही धार्मिक आस्था का केंद्र रहा है यहाँ के हर जिले में प्राचीन मंदिर एवं पुरातात्विक धरोहर देखने को मिलती है छत्तीसगढ़ के हर कोने में स्थित कालीन श्रृंखला और संस्कृति रची बसी है इन्ही में से एक है बालोद जिले से 25 किलोमीटर आगे गाँव अम्बागढ चौकी के पास माता का दरबार जहाँ श्रद्धालु दूर दूर से श्रद्धालु आते हैं। मंदिर के इतिहास के बारे में स्थानीय लोगों का कहना है कि इस स्थान पहले ओड़ान के आदिवासी लोग पूजा पाठ किया करते थे इस स्थान पर एक प्राचीन कुंड जिसकी गहराई लगभग 20 फीट से अधिक है जो पहाड़ी से पत्थरों धार बहती हुए कुंड में गिरता है। झरने का यह पहाड़ी शिखर के सोंडवाड़ से डौंडीलोहारा होते हुए वनांचल क्षेत्र में बहता है, इस प्राकृतिक झरने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है इस अंचल बहने झरने के कारण मंदिर का नाम झरण मैया पड़ा क्योंकि यह क्षेत्र पहाड़ी कलकल मुनि के कारण इसका नाम वनांचल पड़ा। पुराने कुंड के पास प्राचीन शिवलिंग नंदी, घोड़ा, हाथी एवं पीनक के पत्थर स्वरूप अंकित हैं। इन प्राचीन आकृतियों को आदिवासी लोग पत्थरों पर रखकर पूजा करते थे। मंदिर परिसर में प्राचीन शिवलिंग, नंदी यहाँ के राजाओं के कुल देवता डांगरी धोरे एवं राव बाबा की पत्थर की प्रतिमा है। इसके अलावा मंदिर में दक्षिण मुखी हनुमान, राधाकृष्ण एवं भैरव बाबा की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर बनाने के बाद से माता के दरबार में चैत्र एवं कंवार नवरात्रि में भक्तों द्वारा मनोकामना ज्योत कलश प्रज्वलित की जाती है।

लोक चित्र मिथ कथा को भी रेखांकित करते हैं

तारा किस्पोट्टा

अरे! 'इतनी' शब्द चित्र की ही हिंदी में मिथक कहा जाता है। हिंदी में उसका परिहार कर उसने लोग में से प्रत्यय मिथक शब्द बना लिया। कुछ दिनों में मिथ, मिथक शब्द प्रचलन में आकर उसी व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। मिथ, प्रतीक, पुराण कथा और अभिप्राय मिल कर मिथक की स्वरूप प्रदान करते हैं। लोक चित्र परंपरा के द्वारा बाहरी चित्र किसी न किसी मिथ कथा से जुड़े होते हैं। लोक चित्र रेखांकन, अलंकरण की जमीन, कागज, कपड़े, लकड़ी, पत्तों आदि पर भी पाए जाते हैं। इसमें कला परंपराएं, विचार और घटनाओं के सम्बन्ध सूत्र अत्यधिक उलझे हुए होते हैं। मनोवैज्ञानिक, नृत्य सत्य और प्रतीकों के माध्यम से हमसे जुड़ते हुए सूत्र को समझने का प्रयत्न किया जाता है। छत्तीसगढ़ के गांवों में आज भी विभिन्न धार्मिक अवसरों के साथ विचार के आधार पर भी प्रतीकात्मक मिथक चित्र दीवारों या जमीन पर मिथक चित्र बने दिखाई देते हैं।

धार्मिक और शैक्षणिक रूप से प्रसिद्ध गांव हसुआ

कारण ही नवरात्रि के पावन पर्व पर यहाँ बड़ी संख्या में 'मनोकामना ज्योति कलश' प्रज्वलित किए जाते हैं। ग्रामीणों की आपसी एकजुटता और मिलजुलकर कार्य करने की प्रवृत्ति ही इस क्षेत्र की प्रगति का मुख्य आधार है।

लोकेश वैष्णव

महासमुंद और बलौदाबाजार जिले के सीमांत क्षेत्र में बसना विकासखंड के अंतर्गत हसुआ गांव स्थित है। गांव की पूर्व दिशा में स्थित 'माता महामाया' का मंदिर यहाँ का गौरव है। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार, संवत काल में जब शहीद वीर नारायण सिंह की फौज संबलपुर की ओर बढ़ रही थी, तब सैन्य टुकड़ियों का आवागमन इसी मार्ग (सोरखालपुर) से हुआ था। स्थानीय किंवदंती है कि उस दौरान सैन्य सफलता और लोक-कल्याण की कामना के साथ यहाँ विशेष पूजा-अर्चना की गई थी।

वर्तमान सरपंच के प्रयासों से आज महामाया मंदिर धाम में एक भव्य 'मूर्ति चौक' का निर्माण किया गया है। इस मंदिर का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और इसके विषय में अनेक लोक-कथाएं प्रचलित हैं, जिन्हें ग्रामीण श्रद्धापूर्वक 'जनश्रुतियां' कहते हैं। यहाँ वर्ष भर विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन होते रहते हैं।

हसुआ गांव की विशेषता यह है कि यहाँ के लोग शिक्षा के साथ-साथ खेल और समाज सेवा में भी गहरी रुचि रखते हैं। माता महामाया के प्रति अगाध श्रद्धा के

महिसाधक संप्रदाय के महान आचार्य थे बुद्धघोष

सरयूकांत झा

सिरपुर के बौद्ध विहार में बुद्धघोष निवास करते थे जो महर्षि रैवत के शिष्य थे। वहां से प्राप्त शिलालेख में उनका वर्णन मिलता है। ईसा पूर्व सम्राट अशोक के काल में स्थविर मत का विस्तार हुआ। आचार्य बुद्धघोष इसी मत के मानने वाले इतिहास कार विद्वान थे। इनका जन्म स्थान कोसल ही था। वे मंडला के महिसाधक बौद्ध भिक्षुओं के संपर्क में आकर बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए थे। आचार्य बुद्धघोष वेद वेदांग में पारंगत थे, उनमें विलक्षण तर्क बुद्धि थी। आपने यहां कई ग्रंथों की रचना की जिसमें अट्ठकथा, वाणोंदय, अट्ठसालिनी प्रमुख है। आचार्य बुद्धघोष बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध आधार ग्रंथ त्रिपिटक' के सबसे बड़े अट्ठकथाकार माने जाते हैं। श्रीलंका के राजा महानाम के संरक्षण में उन्होंने बौद्ध धर्म के विशुद्ध मार्ग के आधार पर 'विशुद्धि मग्ग' का पाली भाषा में निर्माण किया। सिंहली भाषा में लिखित सभी अट्ठाकथाओं का पाली भाषा में अनुवाद किया। महान विद्वान आचार्य नरेंद्रदेव ने बुद्धघोष को सिंहली अट्ठकथाओं का सबसे बड़ा व्याख्याकार सिद्ध किया है।' पद्य चूड़ामणि' नामक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ भी इनके द्वारा लिखी गई है।

धार्मिक महत्व के देवालय और गुफा राजपुर कोठी में

आशा ध्रुव

सरगुजा अंचल में राजपुर के दक्षिण दिशा में 3 कि मी दूरी पर गेऊर नदी के तट पर ओफरा गांव के पास एक ऊंचे टीले पर राजपुर कोठी है। यहां प्राचीन काल के देवालय हैं जहां शंभु गौरा के पिंड स्थापित हैं। यहां से लगा लालमाटी ग्राम में एक प्राचीन गढ़ है जहां कनेर नामक गोंड राजा का राज्य था। इसके अलावा आसपास में बेलसर हर्राटोला के केरा कछार में शंभु महादेव का देवालय, चलगली का महामाया देवालय, जोगापाठ के बीहड़ जंगल में प्राकृतिक गुफा, धनपुर में गोंड राजाओं की चांडी देवी और अन्य देवों के देवालय, शिवपुर का शंभु महादेव देवालय, आरा पहाड़ में महादेव मंदिर, पीपरोल पर्वत में महादेव की तपोभूमि, बच्छराज पर्वत में स्थित नागराज का निवास, रंगई जंगल में महादेव गुफा, रमकोला की पिंगलाई देवी सीरीकोट का शंभु देवालय जैसे और भी अनेक प्राचीन स्थल हैं जो इतिहास की दृष्टि से आज भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसी तरह वेनदाई पर्वत के कैमूर श्रृंखला में सोन नदी के किनारे समतल भू भाग पर गोंड राजाओं द्वारा बनाया गया किला है, यहां सात तालाब हैं जहां का पानी कभी नहीं सूखता। इन स्थानों पर समय समय धार्मिक आयोजनों के साथ ही मेले का भी आयोजन किया जाता है। स्थानीय लोगों के लिए उपरोक्त स्थलों का अपना अलग ही महत्व है।

नहीं रहीं पंडवानी की महानायिका

पद्म विभूषण डॉ. तीजनबाई का निधन, कला जगत में शोक की लहर

शहरसत्ता टीम

छत्तीसगढ़ की लोक कला पंडवानी को देश और दुनिया में पहचान दिलाने वाली पद्म विभूषण डॉ. तीजन बाई का शनिवार देर रात निधन हो गया. वह 70 वर्ष की थीं. एम्स रायपुर के अनुसार, तीजन बाई ने रविवार सुबह करीब 3.15 बजे अंतिम सांस ली. वह पिछले कुछ समय से बीमार थीं और अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था. दुर्ग जिले के गनियारी गांव में जन्मीं तीजन बाई ने कम उम्र में ही पंडवानी गायन शुरू कर दिया था.महाभारत की कथाओं को अपनी दमदार आवाज, अभिनय और अनूठी प्रस्तुति के साथ मंच पर जीवंत करने की उनकी शैली ने इस लोक कला को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई.भारतीय लोक कला में उनके योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री, पद्म भूषण और देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

जीवन वृत्त: संघर्ष से शिखर तक (जीवनी)

तीजनबाई का जीवन केवल एक कलाकार की यात्रा नहीं, बल्कि रूढ़ियों को तोड़कर अपनी पहचान बनाने की एक महागाथा है।

जन्म: 24 अप्रैल 1956, गनियारी गाँव (भिलाई, छत्तीसगढ़)।

प्रारंभिक जीवन: नाना बृजलाल पारधी से महाभारत की कहानियाँ सुनीं और उन्हें आत्मसात किया। पारधी जनजाति में जन्मीं तीजनबाई को बचपन में अत्यधिक गरीबी और सामाजिक बंधनों का सामना करना पड़ा।

क्रांतिकारी कदम: उस दौर में पंडवानी केवल पुरुषों द्वारा 'बैठकर' (वेदमती शैली) गाई जाती थी। तीजनबाई ने पहली महिला के रूप में खड़े होकर, हाथ में तंबूरा लेकर **'कापालिक शैली'** में पंडवानी गाकर इतिहास बदल दिया। गाँव के रूढ़िवादी समाज ने उन्हें जाति से बाहर निकाला, लेकिन उन्होंने तंबूरा नहीं छोड़ा।

वैश्विक पहचान: 1980 के दशक में रंगकर्मी हबीब तनवीर ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। इसके बाद उन्होंने फ्रांस, इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड और जर्मनी जैसे दर्जनों देशों में छत्तीसगढ़ी लोक कला का परचम लहराया।

ऐतिहासिक उपलब्धियाँ एवं सम्मान

तीजनबाई भारत की सबसे सम्मानित लोक कलाकारों में से एक हैं। उनकी अद्वितीय कला यात्रा को देश-विदेश में सराहा गया:

वर्ष	सम्मान/पुरस्कार	विवरण
1988	पद्म श्री	कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा।
1995	संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार	भारत की राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी द्वारा।
2003	पद्म भूषण	देश का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
2018	फुकुओका पुरस्कार	कला और संस्कृति के लिए जापान का प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मान।
2019	पद्म विभूषण	देश का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पाने वाली छत्तीसगढ़ की पहली महिला।

विशेष पहचान: बिलासपुर विश्वविद्यालय और इंदिरा कला संगीत विश्वविद्याल्ल (खैरागढ़) द्वारा उन्हें **डी.लिट** (D.Litt.) की मानद उपाधि से नवाजा गया है।

तीजन बाई का जन्म गनियारी गांव में आठ अगस्त 1956 को हुआ था. उनका जन्म छत्तीसगढ़ के जाने-माने लोकपर्व तीज के दिन हुआ था, इसलिए माता-पिता ने उनका नाम 'तीजन' रखा.हालांकि कुछ जगहों पर उनका जन्मदिन 24 अप्रैल को बताया जाता है, लेकिन यह इसलिए सही नहीं है क्योंकि उनका जन्म तीज के दिन हुआ था और ये अप्रैल महीने में नहीं होता. तीजन की मां का नाम सुखवती देवी था और उनके पिता का नाम हुनुकलाल पारधी था. तीजन अपने माता-पिता की पहली संतान थीं. उनका बचपन गंभीर अभाव में गुज़रा. पशु-पक्षियों के कलरव, माँ के लोकगीत और पिता के बांसुरी वादन ने नन्हीं तीजन बाई को प्रभावित किया.

एक दिन अपने वृद्ध नाना को उन्होंने पंडवानी गाते हुए सुना तो वह मंत्रमुग्ध हो गईं. उसी समय उन्होंने पंडवानी सीखने का फ़ैसला कर लिया.'पारधी' को अंग्रेजों ने आपराधिक जनजाति अधिनियम, 1871 के तहत अपराधी जाति घोषित कर दिया था, बाद में जवाहर लाल नेहरू के प्रयास से 31 अगस्त 1952 को यह अधिनियम निरस्त कर दिया गया.मगर वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के आ जाने से इस जाति के लोगों की रोज़ी-रोटी पर गहरा संकट छा गया. इस समुदाय के अधिकांश लोग दिहाड़ी मज़दूरी करके जीवन यापन करने को मज़बूर हो गए.

'पारधी' वास्तव में शिकारी होते हैं जो वन से जीव-जंतु पकड़ कर उसे हाट-बाज़ार में बेचा करते थे. यह उनके जीवनयापन का पारंपरिक तरीका रहा था. ऐसे समुदाय से निकल कर तीजन बाई ने पंडवानी के ज़रिए दुनियाभर में अपनी पहचान कायम की है।

पद्म विभूषण डॉ. तीजन बाई का निधन छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत के लिए अपूरणीय क्षति - मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), रायपुर पहुंचकर पद्म विभूषण से सम्मानित विश्वविख्यात पंडवानी गायिका डॉ. तीजन बाई के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने शोकाकुल परिजनों से भेंट कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि डॉ. तीजन बाई ने अपनी अद्वितीय कला-साधना और विलक्षण प्रतिभा से उन्होंने पंडवानी को विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान दिलाई तथा छत्तीसगढ़ का गौरव बढ़ाया। डॉ. तीजन बाई का निधन छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए अपूरणीय क्षति है। इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, विधायक श्री पुरंदर मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

करोड़ों दिलों पर गूंजती रहेगी तंबूरे की तान और बुलंद आवाज : अरुण साव

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध पंडवानी गायिका और पद्म विभूषण से सम्मानित डॉ. तीजन बाई जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि, इस दुखद खबर से हम सभी को गहरा आघात लगा है। उन्होंने प्रदेश की समृद्ध कला और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। वहीं यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पंडवानी की पहचान डॉ तीजन बाई से थी। श्री साव ने कहा कि, उनका जाना देश के लिए और छत्तीसगढ़ के लिए अपूरणीय क्षति है, जिसकी कभी भरपाई नहीं हो सकेगी। उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। करोड़ों दिलों पर तंबूरे की तान एवं बुलंद आवाज गूंजती रहेगी।

भूपेश बघेल ने व्यक्त किया शोक

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पद्म विभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजन बाई के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। भूपेश बघेल ने कहा कि तीजन बाई का निधन छत्तीसगढ़ ही नहीं, बल्कि पूरे देश की लोक कला जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।

डॉ. तीजन बाई के नाम पर होगा गनियारी के स्कूल का नामकरणः गजेन्द्र यादव

स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने विश्वविख्यात पंडवानी गायिका, पद्मविभूषण से सम्मानित एवं छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति की अप्रतिम धरोहर डॉ. तीजन बाई के गृहग्राम गनियारी स्थित निवास पहुंचकर उनके पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके उपरांत वे उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए तथा दाह संस्कार कार्यक्रम तक उपस्थित रहकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने घोषणा किया कि उनके गृहग्राम गनियारी स्थित शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी स्कूल का नामकरण "डॉ. तीजन बाई शासकीय हाई-हायर सेकेंडरी विद्यालय, गनियारी" के नाम से किया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री सुकांत राजपूत द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, निरंकारी फर्नीचर के पीछे, पंडरी रायपुर से मुद्रित एवं शहरसत्ता, एस-15 प्रियदर्शिनी नगर, सेक्टर 1, मातृ-पितृ छाया अपार्टमेंट, रायपुर (छ.ग.), मोबाईल नं. 98271-81979, फोन नं. 0771-3158142, संपादक - सुकांत राजपूत (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार के लिए जिम्मेदार), महाप्रबंधक - प्रदीप चंद्रवंशी (मो. 70006-81023)। डाक पंजीयन - CG/RYP/DN/70/2025-27